हिन्दी-धातु संग्रह

डा० हॉर्नली

प्रकाशक
आगरा विश्वविद्यालय
हिन्दी विद्यापीठ
आगरा।

मुद्रक—
आगरा यूनीवर्सिटी प्रेस आगरा।

प्रथमावृत्ति १] दिसम्बर १९५९ [मूल्य

हिन्दी-धातु संग्रह

डा० हॉर्नली

प्रकाशक
आगरा विश्वविद्यालय
हिन्दी विद्यापीठ
आगरा ।

मुद्रक—
आगरा यूनीवर्सिटी प्रेस आगरा ।

प्रथमावृत्ति ५] दिसम्बर १९५९ [मूल्य

डॉ० हॉर्नेली

[सन् १८४१--१९१८]

डॉ० ए० एफ० रुडोल्फ हॉर्नेली एम० ए०, पी. एच० डी ने अपने कार्यकाल का प्रारम्भ जयनारायण मिशनरी कालेज बनारस में प्राध्यापक के पद से किया। "गोडियन भाषाओं का तुलनात्मक व्याकरण" पुस्तक ने विद्वत् समाज को आपकी ओर आकर्षित कर दिया। इस पुस्तक में आपने उत्तरी भारत की भाषाएँ ली हैं। तत्पश्चात् आप कलकत्ते में मिशन कालेज में प्राध्यापक हुए और इस प्रकार आपका सम्बन्ध रॉयल एशियाटिक सोसाइटी अव बंगाल से स्थापित हुआ। समय-समय पर सोसाइटी के जर्नल में आपके विस्तृत खोजपूर्ण प्रबन्ध प्रकाशित होते रहे। लगभग बीस वर्ष तक आपने सोसाइटी के कार्य में विभिन्न प्रकार से सहायता पहुँचाई।

कलकत्ते के मिशन कॉलेज की समाप्ति पर आपकी सेवाएँ भारतीय-शिक्षा-सर्विस (I E S) में ले ली गई और आपने कुछ काल तक प्रेसीडेन्सी कालज मद्रास में अध्यापन कार्य किया और बाद में वही पर प्रिन्सपल के पद को भी सुशोभित किया।

आपके पिताजी भारत में ही सरकारी पद पर थे जिसके कारण डा० हॉर्नेली को अपनी युवावस्था में ही विभिन्न प्रान्तो में उनके साथ घूमना पडा। इस प्रकार आपको विभिन्न भाषाओ के बोलने वालो के सम्पर्क में आना पडा। आपने इस स्वर्णिम अवसर का सदुपयोग किया और उन सभी भाषाओ का व्यवस्थित रूप में वैज्ञानिक अध्ययन किया। उस काल में कुछ ही ऐसे व्यक्ति थे, जिन्होने पाषाण-शिला-लेख विज्ञान तथा प्राचीन-लेख विज्ञान का अध्ययन किया हो, लेकिन हॉर्नेली महोदय ने अपनी सम्पूर्ण शक्ति से इस विज्ञान का अध्ययन किया और अथक् परिश्रम से बक्सली हस्तलिखित ग्रन्थ की गूढाक्षराणि व्याख्या प्रस्तुत की। भाषा वैज्ञानिक रुचि के कारण आपका सम्पर्क डा० ग्रियर्सन महोदय से भी हुआ और दोनो महारथियो ने मिलकर बिहारी बोलियो का कोश प्रकाशित कराया।

डॉ० हॉर्नेली का सबसे महान् कार्य बोवर हस्तलिखित ग्रन्थ से सम्बन्धित है। यह ग्रन्थ भूर्ज बल्कल पर पुरानी भारतीय लिपि में लिखा हुआ था। इसका समय लगभग चौथी अथवा पाँचवी शताब्दी था, इसका विषय था—औषधि, पिशाचविद्या तथा ज्योतिष विज्ञान। आपके द्वारा प्रकाशित यह ग्रन्थ न केवल आपके ज्ञान व बुद्धि का परिचायक है वरन् पारिभाषिक शब्दो का विश्लेषणात्मक परिचय भी देता है। औषधि सम्बन्धी कार्य तो नवनीतका (Cream of the Medical Science) नाम से प्रख्यात था। इस ग्रन्थ के अध्ययन से, आपकी औषध-विज्ञान से रुचि हो गई और फलस्वरूप जीवन का अन्तिम भाग आपने इसी कार्य में लगाया। आपका महान् कार्य "हिन्दुओ की अस्थिवर्णन विद्या" (Osteology of the Hindus) यह स्पष्ट करता है, कि आदि काल में भी वैदिक आर्यों का ज्ञान कितना था और मनुष्य तथा पशुओं की अस्थियो के विषय में उनका कितना गम्भीर ज्ञान था। आप हिन्दुओ के औषधि तथा शल्य विज्ञान पर एक महान्

ग्रन्थ लिख रहे थे। इस ग्रन्थ में चरक संहिता और सुश्रुत संहिता (Susruta) का अनुवाद करने का विचार था। इस कार्य को पूर्ण करने के पूर्व ही वह इस संसार से विदा हो गये। उनके इस असामयिक निधन से वैज्ञानिक संसार को वह ग्रन्थ न प्राप्त हो सका।

रॉयल एशियाटिक सोसाइटी के तो आप भूषण थे। सन् १८९८ में तो आप सभापति भी रहे और आपका अध्यक्षीय भाषण आपकी सूझ-बूझ व अलौकिक प्रतिभा का ज्वलन्त उदाहरण है। इस भाषण का इतना अधिक प्रभाव हुआ कि आपको अनेक विश्व विद्यालयों से नियुक्ति पत्र प्राप्त हुए, लेकिन आपका सान्निध्य विश्व-विद्यालयों को फिर अधिक न प्राप्त हो सका। भारत से विशाल सामग्री एकत्र करके आपने कुछ काल तक ऑक्सफोर्ड के शान्त वातावरण में कार्य किया।

हिन्दी की धातुओं का संग्रह व उस पर वैज्ञानिक विवेचन भी आपके ज्ञान व परिश्रम का परिचायक है, जिसको हम प्रस्तुत कर रहे हैं।

यह धातु पाठ जर्नल आव एशियाटिक सोसाइटी आव बंगाल के खंड ४९ भाग १ में प्रकाशित हुआ था। वह अंक भी अब अप्राप्य हो गया है। इधर हिन्दी के धातु पाठ पर पुनः संकलन अध्ययन और संपादन की आवश्यकता पर बल दिया गया है। हार्नली महोदय का यह धातु पाठ अनुसंधित्सुओं और विद्वानों को हमारे इस प्रयत्न के द्वारा पुनः उपलब्ध हो सके इस दृष्टि से यह हिन्दी रूपान्तर यहाँ दिया जा रहा है। हिन्दी के भाषा तथा भाषा-विज्ञान विषयक ग्रन्थों में हार्नली महोदय के इस निबन्ध का उल्लेख हुआ है। पाठक अब ऐसे उल्लेखों का समाधान प्रस्तुत पुस्तिका के द्वारा कर सकेंगे।

इस संग्रह में हिन्दी की १९९ मूलधातुएँ १८९ यौगिक धातुएँ तथा २४ परिशिष्ट में दी गई मूल धातुएँ सम्मिलित हैं जिन में स्थान-स्थान पर संस्कृत की ४९९ धातुओं का उल्लेख हुआ है।

इसके हिन्दी रूपान्तर करने में हिंदी विद्यापीठ के अनुसंधान सहायक श्री चन्द्रभान रावत का विशेष हाथ रहा है और दूसरे अनुसंधान सहायक श्री कैलाशचन्द्र भाटिया जी ने भी इसमें अपना सहयोग प्रदान किया है।

श्री कन्हैयालालजी इन्दरचन्दजी हीरावत
की ओर से सादर भेंट

डा० हार्नली

हिन्दी-धातु-संग्रह : व्युत्पत्ति और वर्गीकरण

हिन्दी-धातु से तात्पर्य है उस स्थायी तत्व से जो अर्थ के आधार पर सबद्ध शब्दो में किसी न किसी रूप में पाया जाता है। किसी शब्द के वर्तमान, अन्यपुरुष, एकवचन प्रत्यय (ऐ, ए) को निकाल देने से हिन्दी धातु अवशिष्ट रह जाती है।[1] हिन्दी तथा सस्कृत धातुओ के तुलनात्मक अध्ययन के लिए यह सब से अधिक सुविधा जनक नियम है। इसका कारण यह है कि हिन्दी धातुओ में से अधिकाश की उत्पत्ति सीधे शुद्ध सस्कृत धातुओ से नही हुई है, बहुधा उनका जन्म सस्कृत-धातुओ के परिवर्तित रूपों से हुआ है। ये परिवर्तित रूप अधिकाश वर्तमान काल के हैं।

जब हिन्दी धातुओ के साथ प्रत्यय जुडता है तो उनमें नियमत कोई विकार उत्पन्न नही होता। केवल प्रेरणार्थक क्रिया रूपो में कुछ विकार आ जाता है दीर्घस्वर सदैव ही ह्रस्व कर दिया जाता है —

बोलना—बुलाना।
खेलना—खिलाना।

इसके अपवाद स्वरूप हिन्दी धातुओ में कुछ ऐसी भी धातुयें हैं जिनका रूप भूतकालिक कृदन्त तथा अन्य भूतकालिक रूपो में विकृत हो जाता है। ऐसे अपवाद कर, धर, जा, ले, दे, मर आदि हैं।

धातुओ को दो वर्गों में विभाजित किया जा सकता है यौगिक तथा अयौगिक (Secondary and Primary)[1] अयौगिक धातुए वे हैं जिनका मूल रूप कुछ ध्वन्यात्मक विषयो के साथ सस्कृत में मिल जाता है। यौगिक धातुओ में वे धातुए आती हैं जिनके मूल रूप सस्कृत धातुओ में नही हैं। पर उनकी उत्पत्ति सस्कृत शब्दो से हुई है। जसे हिन्दी 'पैठ' का सबध सस्कृत धातु से नही है क्यो कि सस्कृत में 'प्रविष्ट' कोई धातु नही है, किन्तु सस्कृत कृदन्त 'प्रविष्ट' से हिन्दी 'पैठ' का सबध है। इन धातुओ को यौगिक धातुओ के वर्ग में रखा जाता है।

अयौगिक धातुओ में कुछ तो ऐसी हैं जिनमें हिन्दी तक आते आते कोई ध्वन्यात्मक परिवर्तन नही हुआ है जैसे 'चल' धातु। किन्तु अधिकाश हिन्दी धातुओ में किसी न

१ उदाहरणत बोली, बुलाहट, बुलाना, बोला, बोले के मूल में 'बोल' धातु है।

किसी प्रकार का ध्वन्यात्मक परिवर्तन अवश्य हुआ है। ये ध्वन्यात्मक परिवर्तन सात प्रकार के हो सकते हैं। इन प्रकारों में से कभी एक कभी अनेक धातु को प्रभावित करते दीखते हैं। ध्वन्यात्मक परिवर्तन इस प्रकार हैं —

(१) ध्वनि संबंधी व्यतिहार व्यंजन का लोप या उसका मृदु हो जाना अथवा उसके समकक्षी स्वर का संकोच आदि।

स खाद > हि खा।

(२) वर्गीय प्रत्यय (Class suffix) का लोप। संस्कृत में प्रत्यय धातु और पुरुषवाचकान्त के मध्य में रहता है। इसी आधार पर संस्कृत धातुओं को दस वर्गों में विभाजित किया जाता है। हिन्दी में प्रत्यय धातु के साथ मिला दिए जाते हैं।

(३) कर्मवाच्य प्रत्यय 'य' का लोप जैसे बि+या (वा)।

(४) धातु वर्ग-परिवर्तन। संस्कृत-धातुओं को प्रत्ययों या ध्वन्यात्मक विकारों के अनुसार दस वर्गों (गणों) में विभाजित किया जाता है। इन वर्गों में से छठे वर्ग की धातुएं सब से सरल हैं। उनमें कोई आन्तरिक विकार नहीं होता केवल 'अ' प्रत्यय का योग पर्याप्त है। हिन्दी में प्रायः सभी वर्गों की धातुओं को इस छठे वर्ग की धातुओं के रूपों में परिवर्तित कर दिया जाता है। यह या तो छठे वर्ग के प्रत्यय को अन्य वर्गीय प्रत्ययों के स्थान पर जमा देने से हो जाता है अथवा अन्य वर्गीय प्रत्ययों के अन्त्य स्वर को 'अ' में परिवर्तित करने से होता है।

(५) वाच्य-परिवर्तन। हिन्दी की कुछ धातुओं का उद्गम संस्कृत धातुओं के कर्म वाच्य रूप से है।

(६) काल-परिवर्तन। कुछ हिन्दी धातुओं का उद्गम संस्कृत धातुओं के भविष्य रूपों से है।

(७) ध्वन्यात्मक प्रत्यय 'अपि' का योग प्रेरणार्थक धातुओं में। यह नियम अपवाद रहित है।

यौगिक धातुओं को तीन वर्गों में विभाजित किया जा सकता है

(१) व्युत्पन्न धातुएं वे हैं जिन में मूलस्वर को ह्रस्व करके धातुएं बनाई जाती हैं।

(२) नाम धातुएं—वे हैं जो संज्ञाओं को धातु रूप में ग्रहण करने से बनती हैं।

जन > सं जन्म

ये संज्ञाएं या तो भाववाची होती हैं या कृदन्त।

(३) मिश्रित धातुएं इनमें संस्कृत धातु 'कृ' तथा इससे व्युत्पन्न संज्ञाएं रहती हैं। इनकी पहचान अन्त्य व्यंजन 'र' है।

इस वर्गीकरण के पश्चात् भी कुछ धातुएं इस प्रकार की रह जाती हैं जिनकी व्युत्पत्ति अभी ठीक ठीक निरूपित नहीं की जा सकी है जैसे ढो (ले जाना) तथा 'लौट' (वापस)। इस धातु के संबंध में अनेक अनुमान लगाए जाते हैं। हिन्दी धातुओं के संबंध

में इन साधारण नियमो के उल्लेख के साथ नीचे हिन्दी की मुख्य-मुख्य धातुओं का एक सकलन व्युत्पत्ति तथा इतिहास सहित दिया जा रहा है।

(अ) मूल धातुए –

१ अट् (कमरा)—स० अट्, कर्मवाच्य अट्यते (कर्तृ वाच्य के भाव सयुक्त) प्रा० अट्टइ (हेमचन्द्र, ४,२३०) हिन्दी-अटै।

२ अनुहर (समान दीखना) स० अनु + हृ, प्रथमवर्ग-अनुहरति, प्रा० अणुहरइ (हेमचन्द्र ४,२५९), पू० हि० अनुहरै।[1]

३ आव् (आना)—इस धातु की व्युत्पत्ति का सतोषजनक निरूपण अभी नही हो पाया है। कुछ लोग इसका सबध सस्कृत धातु 'आ-या' से जोड़ते हैं जिससे मराठी धातु 'ये' (आना) व्युत्पन्न हुआ है। इस विचार के अनुसार अन्त्य व्यजन 'व' की व्युत्पत्ति की समस्या रह जाती है। एक बात हमारा ध्यान आकर्षित करती है कि 'आव' के रूप तथा 'पाव' (स० 'प्राप्') क्रिया रूपो में अत्यन्त समानता है। किन्तु 'आव' के रूपो की समानता धातु 'जा' (जाना) (स० 'या') से नहीं है। इस प्रकार वर्तमान कृदन्त का रूप पूर्वी हिन्दी मे 'आवत' तथा पश्चिमी हिन्दी में 'आवतु'[२] (आता हुआ) पूर्वी हिन्दी के 'पावत' तथा पश्चिमी हिन्दी के 'पावतु' (पाता हुआ) समान हैं। इसी प्रकार इन सभी क्रिया रूपो की समानता निर्विवाद है। इसमें भारतीय आधुनिक भाषाओं की क्रिया रूपो को अनुरूपता का सिद्धान्त कार्य कर रहा है। इस प्रकार 'आव' का 'व्' 'पाव' के प्रभाव के कारण है ऐसा प्रतीत होता है। इस प्रकार की अनुरूपता अत्यन्त प्राचीन है तथा इसके चिह्न प्राकृत तथा जिप्सी बोलियो में मिलते हैं।

४ आहर (खिलाना)—स० आहृ, प्रथम वर्ग-'आहरति, प्रा० आहरइ (हेमचन्द्र, ४, २५९ स० खादति) पूर्वी हिन्दी 'आहरै।'

५ उखाड (उखाडना)—स० उत्कृष्, प्रथम वर्ग 'उत्कर्षति', प्रा० उक्कड्ढइ (हेमचन्द्र ४, १८७) हि० उखाडै।[३]

६ उघाढ (निरावण करना)—स० 'उद्घट्', दशम वर्ग उद्घाटयति, प्रा० उग्घाडेइ, अथवा छठा वर्ग, 'उग्घाडइ' (हेमचन्द्र, ४३३) हि० उघाडै।

७ उठ् (Rise)—स० उत्-स्था, कर्तृवाच्य—उत्थीयते (कर्तृवाच्य के भाव सयुक्त) प्रा० उट्ठेइ अथवा छठा वर्ग, उट्ठइ (हेमचन्द्र ४१७) हि० उठ। प्राकृत के छठे वर्ग का रूप 'उट्ठाग्रइ' अथवा 'उट्ठाइ' (वररुचि, ८२६) भी मिलता है।

८ उड् (Fly)—स० उद्डी, छठा वर्ग, उड्डीयते, प्रा० उड्डेइ अथवा छठा वर्ग, उड्डइ, हि० उडै।

९ उतर—स० उत्-तृ', प्रथम वर्ग उत्तरति, प्रा० उत्तरइ (हेमचन्द्र, ४३३९), हि० उतरै।

---

१ पश्चिमी हिन्दी में यह रूप नही मिलता। २ ब्रज में अधिकाश 'आयतु' मिलता है।

३ ब्रज भाषा में—ड का र हो जाने से उखारै रूप मिलता है।

१ उचस् (upset, come off from, come down) सं० उद्‌चस प्रथम वर्ग उद्‌चसति (उच्चसति) प्रा० उच्चसइ (हेमचन्द्र ४१०४) हि० उचसैं।[1]

११ उचार या उचास (upset, take down)—सं० उद्‌चस प्रेरणार्थक उद्‌चासयति प्रा० उच्चासेइ अथवा छठा वर्ग 'उच्चासइ' हि० उचासे या उचारैं।[2]

१२ उपज् (grow up) सं० उद्‌पद्, छठा वर्ग उत्पद्यते प्रा० उप्पज्जइ (हेमचन्द्र ११४२) हि० उपजै।

१३ उबल (Boil)—सं० उद्‌ज्वल प्रथम वर्ग 'उज्ज्वलति' प्रा० 'उज्जलइ' हि० उबलै। —[व्र० उबरै]

१४ उबार (Keep in reserve)—सं० उद्‌वृ प्रेरणार्थक उद्‌वारयति प्रा० उव्वारेइ या छठा वर्ग उव्वारइ, हि० उबारैं।

१५ उभार् (raise up or excite) सं० उद्‌भृ का प्रेरणार्थ-उद्‌भारयति प्रा० उब्भारेइ या छठा वर्ग उब्भारइ हि० उभारैं।

१६ उलह् या उलह् (grow up also reprove)—सं० उद्‌लस् प्रथम वर्ग उल्लसते उल्लहइ (त्रिविक्रम ३, १ १११ निस्सरति हेमचन्द्र ४ २११ में उल्लुहइ) पूर्वी हि० उलहै, प० हि० उलहै।

१७ उहर् (Subside)—सं० अवतृ प्रथमवर्ग अवतरति प्रा० ओहरइ, (हेमचन्द्र ४ ८५ ओयरइ हि० उहरै।

१८ ऊंघ् (be drowsy)—संस्कृत ? प्रा० उंघइ (हेमचन्द्र ४ १२ निद्रायति) हि० ऊंघै।

१९ ऊम (be excited raised up)—सं० उद्‌भृ, प्रथमवर्ग उद्‌भवति प्रा० उब्भवइ (वररुचि ८ १) या उम्मइ) हि० ऊमैं अथवा ऊम्मै प्रा० उम्म (हेमचन्द्र २ ५१)।

२ औध—इसकी व्याख्या यौगिक धातुओं में है।

२१ औट् (burn) सं० अवकट् छठा वर्ग अवकट्यति प्रा० ओअट्टइ, हि० औटे।

२२ औस (rot)—सं० अपवस् प्रथमवर्ग अपवसति प्रा० अववसइ, या ओवसइ, हि० औसै[3]।

२३ कर् (do)—सं० कृ अष्टमवर्ग करोति वैदिक (प्रथमवर्ग) में भी करति प्रा० करइ (वररुचि ८ १३) हि० करै। प्रा० में (दशम् वर्ग) करेइ (हेमचन्द्र ४ ११७) भी है। वैदिक (पंचम वर्ग) में कृणोति भी है प्रा० कुणइ वररुचि ८ १३)।

२४ कस् (Test) सं० कष्, प्रथम वर्ग कषति प्रा० कसइ हिन्दी कसै

२५ कस् (Tighten)—सं० कष् प्रथमवर्ग कषति' कष्टोर्थ में कृषति भी इससे प्रा० कसइ, हि० कसै।

---

१ प० हि० में उचसै रूप मिलता है तथा व्रज में उचरैं।

२ व्र० में उचारै।

३ व्रज में—औसैं मिलता है।

२६ कह (say)—स० कथ्, दशम वर्ग कथयति, प्रा० कहे (सप्तशतक हाल) (V ३५) या छठे वर्ग में कहइ (हेमचन्द्र, ४ २. पृष्ठ ६६) हि० कहै।

२७ काट् (cut)—स० कृत्, प्रेरणार्थक, कर्तयति, प्रा० कट्टेइ या छठे वर्ग में—कट्टइ (हेमचन्द्र, ४, ३८५) हि० काटै।

२८ काढ (draw)=इसकी व्याख्या यौगिक धातुओं के साथ है।

२९ काप या कप् (tremble)=स० कप, प्रथम वर्ग कम्पति प्रा० कपइ, (हेमचन्द्र १,३०) हि० काँपे या कपै। [ब्रज में इससे भाववाचक संज्ञा—कपकपी भी बनता है]

३० किन् या कीन (buy)=स० क्री, नवम वर्ग—क्रीणाति प्रा० किणइ (वररुचि, ८३०) या किणइ (Delius Radices Pracriticae) हि० किनै या कीनै।

३१ कूट् (Pound)=स० कुट्ट, दशम वर्ग (कुट्टयति, प्रा० कुट्टेइ या छठवा वर्ग कुट्टइ, हि० कूटै।

३२ कूद या कूद (jump)=स० स्कुद (या स्कद), प्रथम वर्ग 'स्कुदते, प्रा० कुदइ, हि० कूँदै, कूदै।

३३ कोढ या कोर (scrape)=स० कुट्, दशम वर्ग, कोटयते, प्रा० कोडेइ या कोडइ. प० हिन्दी कोडे या पू० हि० कोरै।

३४ कोप् (be angry)=स० कुप्, छठा वर्ग 'कुप्यति', प्रा० कुप्पइ (हेमचन्द्र, ४,२३०) हि० कोपै।

३५ खप् (be expended, sold)=स० क्षप, दशमवर्ग अथवा प्रेरणार्थक (कर्म वाच्य का) क्षप्यते, प्रा० खप्पइ, हि० खपै।

३६ खा (eat)=स० खाद्, प्रथम वर्ग 'खादति', प्रा० खा अइ या इसका संकुचित रूप 'खाइ' (हेमचन्द्र, ४,२२८) हि० खाय्।[1]

३७ खाँस (cough)=स० कास्, 'प्रथम वर्ग 'कासते', प्रा० कासइ, या खासइ (हेमचन्द्र, १, १८१)=खासिग्र=कासित, हि० खाँसै।

३८ खिल (be delightad, flower)=स० क्रीड्, कर्मवाच्य—क्रीड्यते, प्रा० खिड्डइ या खिल्लइ (हेमचन्द्र ४,१६८ खेड्ड तथा ४,३८२ खेल्ल) हि० खिलै।

३९ खीज या खीझ (be vexed)=स० खिद, छठवा वर्ग खिन्दति, सप्तम वर्ग में खिन्ते या चतुर्थ वर्ग में खिद्यते, प्रा० खिज्जइ (हेमचन्द, ४,२२४,) हि० खीजै या खीझै।

४० खुल (open)=स० खुड्, कर्मवाच्य खुड्यते, प्रा० खुड्डइ या खुल्लइ, हि० खुलै।[2]

---

१ प्राकृत में इसका कर्मवाच्य रूप खाद्यते भी प्रयुक्त हुआ है। किन्तु यह प्रयोग कर्तृवाच्य के भाव को स्पष्ट रूप से लिए हुए है, जैसे 'खज्जति' 'वे खाते हैं।'

२ खुल, खोल, खूट धातुएँ एक दूसरी से संबंधित हैं। इनका संबंध संस्कृत धातुओं, क्षोट, खोट, खोड्, खोर्, खोल खुड खुण्ड, खुर, क्षुर बताया जाता है। इन सब का अर्थ होता है, लग गति, विभाजन करना, या तोड़ना। इनका मूल रूप क्षोट, क्षर, या क्षुद् है।

४१ खूट (Pluck)—सं खोट कर्म वाच्य, खोट्यते प्रा॰ खुट्टइ (हेमचन्द्र ४ ११६ यह प्रयोग स तोडने का स्थानापन्न बताया जाता है जिसकी धातु 'तुड' है हि खूट।

४२ खेल् (Play)—सं क्रीड् (क्रीडा तथा खेल) प्रथम वर्ग क्रीडति प्रा खेडुइ (हेमचन्द्र ४ १८८) या खेल्लइ (हेमचन्द्र ४ ३८२) हि खले (प्रा में कीलइ भी मिलता है[1])।

४३ खो (Throw away lose)—सं क्षिप्, छठवां वर्ग क्षिपति प्रा खिवइ हि खोय।

४४ खोल् (open) स खुड्, (divide) प्रथम वर्ग खोडयति प्रा खोडेइ या छठवां वर्ग खोडइ या खोलइ हि खोलै।

४५ गठ् (बांधना)—स ग्रथ् दसम वर्ग ग्रथाति प्रथम वग ग्रन्थति प्रा गठइ (हेमचन्द्र ४ १२) हि गठै।

४६ गढ या गड (बनाना या खोदना) सं घट्, प्रथम वर्ग घटते प्रा घडइ (हेमचन्द्र ४ ११२) हि गढै or गडै।

४७ गढाव् (बनाना) स घट् प्रेरणार्थक घाटयति प्रा गडावेइ या गडावइ (हेमचन्द्र ४ ३४) हि गढावै।

४८ गन् या गिन् (गिनना)—स गण दसम वर्ग गणयति प्रा गणेइ (सेतुबन्ध ११ २७) या छठवां वर्ग गणइ (हेमचन्द्र ४ ३५८) हि गनै या गिनै।

४९ गम् (जाना)—सं गम् कर्म वाच्य गम्यते प्रा गम्मइ (वररुचि ७ १ ८ ५८) हि गमै।

५ परियाव् या गलियाव (गाली देना)—सं गृह् या गर्ह्, प्रथम वर्ग गर्हयति प्रा गरिहावइ (हेमचन्द्र २ १ ४) या गलिहावइ, पूर्वी हि परियावै (गरिहावै)

५१ गल् (पिघलना)—स गल्, प्रथम वर्ग गलति प्रा गलइ (हेमचन्द्र ४ ४१८) हि गलै।

५२ गह् (पकडना)—स ग्रह्, नवम वर्ग गृह्णाति प्रा छठवां वर्ग गेह्णइ (वररुचि ८ १५) या गहइ (त्रिविक्रम २ ४ १५७) हि गहै।

५३ गा (गाना)—स गै प्रथम वर्ग-गायति प्रा गायइ, या इसका सकुचित रूप गाइ (वररुचि ८ २६) हि गाय।

५४ गाड या गाड या पूर्वी हि गाडै—इसकी व्याख्या मौलिक धातुओ में है।

५५ गिर् (गिरना)—स गृ छठवां वर्ग गिरति प्रा गिरइ हि गिरै।

५६ गुह (बांधना)—स गुप् छठवां वर्ग गुफति प्रा गुहइ (हेमचन्द्र १ २३६) हि गुहै।

५७ गोच (catch)—स ग्लु च (गुच) प्रथम वर्ग ग्लु चति प्रा गु चइ, हि गोचै।

५८ घट् (कम होना)—स घट्ट कर्म वाच्य घट्टयते प्रा घट्टइ, हि घटै।

---

[1] Delius Radices Pracriticae, पृ ४७।

५६ घड (बनाना, घटित होना) = स० घट्, प्रथम वर्ग घटते, प्रा० घडइ, (हेमचन्द्र, ४, ११२) हि० घड ।

६० घस् या घिस् (रगडना) स० घृष्, प्रथम वर्ग घर्षति, प्रा० छठवाँ वर्ग घसइ (= घृषति) या घिसइ (हेमचन्द्र ४, २०४) जहां यह ग्रसति का स्थानापन्न बताया गया है । हि० घसैं या घिसैं ।

६१ घाल् (फेंकना, नष्ट करना, मिलाना) = स० घट्ट्, प्रथम वर्ग घट्टते, प्रा० घड्डइ या घल्लइ (हेमचन्द्र ४, ३३४, त्रिविक्रम, ३, ४, ६ जहाँ यह क्षपति का स्थानापन्न बताया गया है, हि० वालै

६२ घुल् या घोल (द्रवीभूत पदार्थों का मिलना) = स० (घूर्ण, घुण् और घोल् भी) प्रथम तथा छठवाँ वर्ग घूर्णति (घोणते, घुणति घोलयति भी) प्रा० घुलइ या घोलइ (वररुचि ८, ६, हेमचन्द्र ४, ११७) हि० घोलै, घुलै ।

६३ घूम (घूमना) स० घूर्ण छठवाँ वर्ग—घूर्णति, प्रा० घुम्मइ (हेमचन्द्र, ४, ११७) हि० घूम ।

६४ घेर् (इकट्ठा करना, घेरना) स० ग्रह ?

६५ चढ् (बढाना, चढना) स० उत्शद्, छठवाँ वर्ग उच्छदति, प्रा० (उ का लोप करते हुए) चड्ढइ या चड्डइ (त्रिविक्रम ३,१ १२८) हि० चढै[1] ।

६६ चप् (be abashed) = स० चप् (दवाना) कर्मवाच्य चप्यते, प्रा० चप्पइ, (हेमचन्द्र ४, ३९५) चपिज्जइ, त्रिविक्रम, ३, ४, ६५ चप्पिज्जइ) हि० चपैं । इसका सकर्मक रूप चाप् या चाँप है ।

६७ चर् (घास चरना) = स० चर्, प्रथम वर्ग चरति, प्रा० चरइ, हि० चरै ।

६८ चल् या चाल् (चलना) = स० चल्, प्रथम वर्ग चलति, प्रा० चलइ, या चल्लइ (हेमचन्द्र ४, २३१, हि० चलै या चालै) ।

६९ चव् (drip) = स० च्यु, प्रथम वर्ग च्यवते, प्रा० चवइ (हेमचन्द्र ४, २३३) हि० चवै ।

७० चाव् (चबाना) = स० चव्, प्रथम वर्ग चर्वति, प्रा० चब्बइ, हि० चावै)

७१ चित् (सोचना) स० चित्, दशम वर्ग चिन्तयति, प्रा० चितेइ (सप्तशतक १५६, हेमचन्द्र ४, २६५) या चितइ (हेमचन्द्र ४, ४२२) हि० चितै ।

---

१ उत्शद् का अर्थ ऊपर की ओर गिरना है । यह शब्द सस्कृत का एक अद्भुत शब्द है । सयुक्त उत् + पत् की भाति लिया गया है । अन्त्य 'द्' (शद्) प्रा० में 'ड' हो जाता है (हेमचन्द्र ४, १३० झडइ और वररुचि ८, ५१, हेमचन्द्र ४, २१९ सडइ) आरभिक 'उ' का लोप हो जाता है । 'छ' का महाप्राणत्व 'ड' के साथ सलग्न हो जाता है अथवा बिल्कुल समाप्त हो जाता है जैसे उच्छाह > (उत्साह) से चाह अथवा 'इच्छा' से । पुरानी हिन्दी में धातु 'चड्ढ' है, मराठी में चढ और चड दोनो है, गुजराती, सिन्धी तथा बगाली में 'चड' है । यही रूप हेमचन्द्र ने दिया है (४, २०६—चडइ) त्रिविक्रम (३, १२८) चड्डइ और चडइ दोनो देता है ।

७२ चिन् (इकट्ठा करना)—सं चि पंचम वर्ग चिनोति प्रा छठवां वर्ग चिणइ (वररुचि ८ २९, हेमचन्द्र ४ २४१) हि चिनै ।

७३ चुन् (एकत्रित करना छाँटना)—सं चि पंचम वर्ग चिनोति प्रा० छठवां वर्ग चुणइ (हेमचन्द्र ४ २१८) हि चुन ।

७४ चू (चूना)—सं च्युत (या श्च्युत) प्रथम वर्ग च्यवति प्रा चोयइ, या चुयइ (हेमचन्द्र २, ७७) हि चुए ।

७५ चूम् (चूमना)—सं चुम्ब प्रथम वर्ग चम्बति प्रा चुम्बइ (वररुचि ८ ७१) हि चूमै ।

७६ छा (Thatch)—सं छद् प्रथम वर्ग छादयति प्रा छाएइ (Delius Radices Pracriticae, ४४) या छठवां वर्ग छायइ (त्रिविक्रम २, ४ ११ या छायइ, हेमचन्द्र ४ २१ या (संकुचित होकर) छाइ वररुचि ८ २६) हि छाए ।

७७ छिद् या छिप् या छप (छपना)—सं क्षि (गुप्त रूप से रहना) प्रेरणार्थक कर्म वाच्य क्षेप्यते प्रा छीप्पइ or छिप्पइ, हि छिपै, छिपै या छपै ।

७८ छो या छोह (छना)—सं स्पृश् छठवां वर्ग स्पृशति, प्रा छिहइ या छिवइ (हेमचन्द्र ४ १८२) हि छोहै or छीवै ।

७९ छीज् (नष्ट होना) सं क्षिद् कर्म वाच्य क्षियते प्रा छिज्जइ (हेमचन्द्र ४ ४१४) हि छीजै ।

८० छ या छह्—(छना)—सं छप छठवां वर्ग छपति प्रा छवइ हि छपे या छहै ।

८१ छट या छट (छटना)—सं छट (काटना) कर्मवाच्य छट्यते प्रा छुट्टइ, हि छूटै या छटै ।

८२ छोड़ (छोड़ना)—सं छृद्, प्रेरणार्थक छुद्दयति प्रा छोडेइ या छठवां वर्ग छोडइ, हि छोडै ।

८३ जन् (जन्मना)—सं जन् प्रेरणार्थक जनयति प्रा जणेइ (सप्तशतक ७६) या छठवां वर्ग जणइ, हि जनै । संस्कृत के छठवें वर्ग में जायते भी है प्रा जायइ (हेमचन्द्र ४ १३६) हिन्दी deest.

८४ जर् (उच्चारण करना)—सं जल्प प्रथम वर्ग जल्पति प्रा जपइ (वररुचि ८ २४) हि जपइ ।

८५ जर् (ज्वर पीड़ित) सं ज्वर्, प्रथम वर्ग ज्वरति प्रा जरइ हि जरै ।

८६ जल् (जलना)—सं ज्वल्, प्रथम वर्ग ज्वलति प्रा जलइ (हेमचन्द्र ४ ३६५)

८७ जा (जाना)—सं या द्वितीय वर्ग याति प्रा छठवां वर्ग जायइ या (संकुचित जाइ) (हेमचन्द्र ४ २४) हि जाय ।

८८ जाग् या जागर (watch) सं जागृ द्वितीय वर्ग जागर्ति प्रा प्रथम वर्ग जागरइ तथा छठवां वर्ग जग्गइ (हेमचन्द्र ४ ८) हि जागरै या जागै ।

८९ जाच् (जाँचना)—सं या प्रथम वर्ग याचति प्रा छठवां वर्ग जाचइ (हेमचन्द्र ४ ७) हि जाचै ।

९० जी (रहना) = सं० जीव् प्रथम वर्ग जीवति, प्रा० जीअइ (हेमचन्द्र १, १०१) हि० जीऐ।

९१ जूझ् (लड़ना) = सं० युध्, चतुर्थ वर्ग 'युध्यते', प्रा० जुज्झइ (वररुचि, ८, ४८) जूझै, पुरानी हिन्दी में 'झुझ्' रूप भी मिलता है।

९२ जुट् (लगजाना) सं० जुट्, कर्मवाच्य 'जुट्यते', प्रा० जुट्टइ, हि० जुटै।

९३ जोड़ (join) = सं० जुट्, दशम वर्ग 'जोटयति', प्रा० जोडेइ, या छवठाँ वर्ग हि० जोड़ै।

९४ झट् (Argue) = सं० झट्, प्रथमवर्ग झटति, प्रा० झटइ, हि० झटै।

९५ = झड़् या झर (गिरना) = सं० शद्, छठवाँ वर्ग—शदति, प्रा० झडइ, (हेमचन्द्र ४,१३० छडइ) हि० झड़ै, झरै।

९६ झाँट् (Rush about) = सं० झट्, कर्मवाच्य झट्यते कर्तृवाच्य के भाव को लिए हुए प्रा० झटई (हेमचन्द्र ४, १६१, झट्टइ) हि० (झाँटै झट से सं० झाट (झाडी) आता है, हि० झाट, औझाड)

९७ झाड़् (झाड़ना) = सं० शद्, कर्म वाच्य 'शादयति', प्रा० झडेइ, या छठवाँ वर्ग में झाडइ, हि० झाँडै।

९८ झाल् (Polish) = सं० ज्वल (चमकना) (?) कर्मवाच्य ज्वालयति, प्रा० झालेइ या छठवें वर्ग में झालइ, हि० झालै। (cf) सं० झल्ला (चमक) झल्लक्का (लपट)।

९९ टक् या टक (सीना) = सं० टक्, प्रथम वर्ग—टकति, प्रा० टकइ, हि० टकै या टकै (सम्भवत यह 'कृ' धातु की एक सयुक्त धातु हो।)

१०० टूट् या तुट् (टूटना) = सं० त्रुट्, छठवाँ वर्ग—त्रुटति (चौथे वर्ग में त्रुट्यति भी है) प्रा० तुट्टइ (हेमचन्द्र ४,२३०) या टुट्टइ (पिंगल, में डा० राजेन्द्र लाल मित्रा द्वारा उद्धृत, पृ० ६६) हि० तूटै, टूट।

१०१ ठग् (धोखादेना) + सं० स्थग्, प्रथम वर्ग—स्थगति, प्रा० ठगइ, हि० ठगै।

१०२ डार् (डाल) = सं० दृ (विखराहुआ) प्रेरणार्थक—दारयपि, प्रा० डारेइ या छठवें वर्ग में डारइ, हि० डारै या डालै।

१०३ डाँस् या डास (काटना) = सं० दश् या दस्, प्रथम वर्ग—दशति या दसति प्रा० डसइ (हेमचन्द्र १,२१८) या डसड, हि० डाँसै, डासै या डसै।

१०४ डोल् (झूलना) = सं० दुल्, दशम वर्ग—दोलयति, प्रा० दोलेइ (हेमचन्द्र ४, ४८) या डोलेइ (देखो हेमचन्द्र १,२१७ डोला) या छठवें वर्ग में डोलइ हि० डोल।

१०५ ढक् (ढकना) = स्थग्, कर्मवाच्य में स्थग्यते, प्रा० ढक्केइ (सप्तशतक A ५४ ठग्गेइ) या छठवें वर्ग में ढक्कइ (हेमचन्द्र, ४, २१, जहाँ यह 'छाद्' का स्थानापन्न बताया गया है, हि० ढकै (सप्त शतक, पृ० ४३,६४, ६७)[1]।

---

१ सम्भवत 'स्थाग्'—कृ धातु की यह सयुक्त धातु हो।

१०६ डीठ (Accuse)—स ? प्रा डमइ (हेमचन्द्र ४ ११८ जहाँ यह स विपुत का स्थानापन्न बताया गया है) हि डीठै ।

१०७ ढूक् (पहुँचना)—स ढौक प्रथम वर्ग—ढौकते प्रा ढुक्कइ हि ढूकै ।

१०८ ढूढ़ (खोजना)—ढूढ़ छठें वर्ग में ढुण्ढति प्रा ढुंढइ, हि ढूढ़ै ।

१०९ तप (जलना)—सं तप प्रथम वर्ग—तपति छठें वर्ग में—तप्यति भी प्रा तप्पइ (हेमचन्द्र ४ १४ संतप्पइ) हि तपै ।

११० तर (पार करना)—सं तृ प्रथम वर्ग तरति प्रा तरइ (हेमचन्द्र ४८६) हि तरै ।

१११ ताक (attend)—स तर्क दसम वर्ग—तर्कयति प्रा तक्केइ (हेमचन्द्र ४ ३७) या पाँचवें वर्ग में तक्कइ, हि ताकै ।

११२ ताप (तापना)—स तप प्रेरणार्थक—तापयति प्रा तावेइ या छठें वर्ग में तावइ, हि तापै ।

११३ तार (बचाना)—सं तृ (पार करना) प्रेरणार्थक—तारयति प्रा तारेइ या पाँचवें वर्ग—तारइ हि० तारै ।

११४—तुल् (तोलना)—स तुल कर्मवाच्य तुल्यते प्रा तुल्लइ हि तुलै ।

११५ तोड़ या तोर् (तोड़ना)—स त्रुट्, प्रेरणार्थक त्रोटयति प्रा तोडेइ या छठवाँ वर्ग तोडइ (देखिए हेमचन्द्र ४ ११६) प हिन्दी तोड़ै पू हि तोरै ।

११६ तोल् या तोर् (तोलना)—सं तुल् दसम वर्ग—तोलयति या प्रथम वर्ग में—तोलति प्रा तोलेइ या तोलइ (विक्रम २४९७) हि तोलै या तोलै ।

११७ थम्म या थम्ह (be arrested be supported)—स स्तम्भ प्रथम वर्ग स्तम्भते प्रा थम्मइ, हि थम्मै या थम्है ।

११८ थाम् या थाम्ह् या थाम्भ् या थाँभ् (Stop)—सं स्तम्भ् (be firm) प्रेरणार्थक स्तम्भयति प्रा थम्मेइ या पाँचवें वर्ग में थम्मइ या हि थाँभै ।

११९ थोप (ढर)—स स्तुप चतुर्थ वर्ग—स्तुप्यति प्रा थुप्पइ हि थोपै ।

१२० दब (be pressed down)—स दम् कर्मवाच्य दम्यते प्रा दम्मइ या दव्वइ हि दबै ।

१२१ दर (Split)—स दृ प्रथम वर्ग-दरति प्रा दरइ (हेमचन्द्र ४ १०६) हि दरै ।

१२२ दह् (जलाना)—स दह् प्रथम वर्ग—दहति प्रा दहइ (पिशल द्वा राजेन्द्र लाल मित्रा द्वारा उद्धृत पृ १११ हेमचन्द्र २ २१८—में डहइ किन्तु यह धातु हिन्दी में नहीं है हि दहै।

१२३ दार (Split)—स दृ प्रेरणार्थक-दारयति प्रा दारेइ या पाँचवें वर्ग में दारइ हि दारै ।

---

१ [illegible]

१२४ दाह् (जलाना) = सं० दह्, प्रेरणार्थक दाहयति, प्रा० दाहेइ या छठवें वर्ग में दाहइ, हि० दाहै।

१२५ दिस् (दिखाता) = सं० दिश्, छठवें वर्ग मे—दिशति, प्रा० दिसइ, हि० दिसै।

१२६ दिस् या दीस् (प्रकट होना) = सं० दृश्, कर्मवाच्य दृश्यते, प्रा० दिस्सइ या दीसइ (हेमचन्द्र ३,१६१) हि० दिसै या दीसै।

१२७ दे (देना) = सं० दा, कर्मवाच्य दीयते, प्रा० देइ (Cowell's Edn of प्राकृत प्रकाश, पृ० ६६, हेमचन्द्र ४,२३८) हि० देय या दे। सम्भवत छठवें वर्ग में दइ (सप्तश तक ५,२१६) हि० deest

१२८ देख् (देखना) = सं० दृश् भविष्य द्रक्ष्यति (वर्तमान के भाव मे प्रयुक्त) प्रा० देक्खइ (हेमचन्द्र ४, १८१) हि० देखै।

१२९ धर् (रखना, पकडना) = सं० धृ, प्रथम वर्ग धरति या धरते, प्रा० धरइ (हेमचन्द्र, ४, २३४) हि० धरै।

१३० धस् या धस् (डूबना, घुसना) = सं० ध्वस्, प्रथम वर्ग—ध्वसते, प्रा० धसइ या धसइ (पिंगल, राजेन्द्रलाल मित्रा, पृ० ११८ में 'धावति' का स्थानापन्न बताया गया है) हि० धसै, धसै।

१३१ धार् (hold) = सं० धृ, प्रेरणार्थक धारयति, प्रा० धरेइ या छठवां वर्ग-धरइ, हि० धरै।

१३२ धो (धोना) = सं० धाव्, प्रथम वर्ग-धावति, (या धू, छठवां वर्ग-धुवति) प्रा० धोअइ (Delius Radices Pracriticae, पृ० ७८) या धोवइया धुअइ (सप्तशतक, ५, १३३, २८३) या धुवइ (हेमचन्द्र ४, २३८) हि० धोए या धोवै।

१३३ नट् (नाचना) = इसकी व्याख्या यौगिक धातुओं में देखिए।

१३४ नव् या नो (bend, bow) सं० नम्, प्रथम वर्ग नमति, प्रा० नमइ (देखो-हेमचन्द्र १, १८३ नमिम) या नवइ (हेमचन्द्र, ४, २२६) हि० नवै, नौऐ।

१३५ नवाव या निवाव (bend, fold) सं० नम्, प्रेरणार्थक नमयति, प्रा० नवावेइ या छठवां वर्ग-नवावइ, हि० नवावै या निवावै।

१३६ नहा (नहाना) = सं० स्ना, द्वितीय वर्ग-स्नाति, प्रा० चतुर्थ वर्ग ण्हाअइ (Delius Radices Pracriticae, पृ० २०) या (सकुचित) ण्हाइ (हेमचन्द्र ४, १४) हि० नहाय।

१३७ नाच् (dance) = सं० नृत्, चतुर्थ वर्ग, नृत्यति, प्रा० नच्चइ (वररुचि ८, ४७, हेमचन्द्र ४, २२५) हि० नाचै।

१३८ निकाल् या निकार् (बाहर खींचना) = देखि यौगिक धातुएं।

१३९ निकास् = सं० निस्-कस्, प्रेरणार्थक-निष्कासयति, प्रा० निक्कासेइ या छठवें वर्ग में निक्कासइ, हि० निकासै।

१४ निखोड़ या निखोर् (Peel) देखिये यौगिक धातुएँ।

१४१ निखर् (साफ)—सं. निः-क्षर प्रथम वर्ग निःक्षरति प्रा. निक्खरइ हि. निखरै।

१४२ निखार्—(Clean peel)—सं. निक्षर (या निः-क्षल्) प्रेरणार्थक निःक्षारयति प्रा. निक्खारेइ या छठवें वर्ग में निक्खारइ हि. निखारै।

१४३ निगल–(Swallow)—इसकी व्याख्या यौगिक धातुओं के साथ है।

१४४ निथार[1] (साफ करना)—सं. निःस्थल प्रेरणार्थ-निःस्थलयति प्रा. निस्थालेइ या छठवें वर्ग में-निस्थालइ हि. निथारै।

१४५ निबड़ (अलग होना निर्णय होना पूर्ण होना)—सं. निर्-वट (विभाजित करना) दशमवर्ग निर्वटयति प्रा. निव्वडेइ या निव्वडइ (हेमचन्द्र ४ ६२ वहाँ इसका अर्थ पृथक बताया गया है, स्पष्टो वा भवति) हि. निबड़ै।

१४६ निबाह् (Accomplish)—सं. निस्-वह प्रेरणार्थक-निर्वाहयति प्रा. निव्वाहेइ या छठवाँ वर्ग निव्वाहइ, हि. निबाहै या निभाय (महाप्राणत्व की घटना बदली हो गई)।

१४७ निबाड़ (पृथक आदि)—सं. निर्-वट् (बाँटना) प्रेरणार्थक-निर्वाटयति प्रा. निव्वाडेइ, हि. निबड़ै।

१४८ निबेड़ (पृथक आदि)—सं. निर्-वड प्रथम वर्ग-निर्वडते प्रा. निव्वडइ, हि. निबेड़ै यह (१४७) का एक दूसरा रूप है।

१४९ निवार् (hinder)—सं. नि-वृ, प्रेरणार्थक निवारयति प्रा. निवारेइ (हेमचन्द्र ४ २२) या छठवाँ वर्ग-निवारइ, हि. निवारै।

१५ निसर् (निकलना)—सं. निस-सृ प्रथम वर्ग-निस्सरति प्रा. निस्सरइ (रामेश्वर मिश्र पृ. १०७) या णीसरइ (हेमचन्द्र १ ९३ ४ ७९) हि. निसर।

१५१ नोच् (pinch)—सं. निकुच छठवाँ वर्ग-निकुचति प्रा. णिउचइ हि. नोचै (इ+उ) का ओ हो गया।

१५२ पच (हजम होना)—सं. पच्, कर्मवाच्य-पच्यते प्रा. पच्चइ हि. पचै।

१५३ पठाव (भेजना)—सं. प्र-स्था प्रेरणार्थक प्रस्थापयति प्रा. पट्ठावेइ या छठवाँ वर्ग पट्ठावइ (हेमचन्द्र ४ ३७) हि. पठावै।

१५४ पड़ या पर (गिरना)—सं. पत प्रथम वर्ग पतति प्रा. पडइ (वररुचि ८ ५१) प. हि. पड़ै पू. हि. परै।

१५५ पढ़ (पढ़ना)—सं. पठ प्रथम वर्ग पठति प्रा. पढइ (हेमचन्द्र १ १९९, हि. पढ़ै।

१५६ परख या परक (परीक्षा करना)—सं. परि-ईक्ष प्रथम वर्ग-परीक्षते प्रा. परिक्खइ, हि. परखै (इस शब्द का एक गौण अर्थ अभ्यस्त होना और है)।

१५७ परच (जान पूछ होना)—सं. परि-चि प्रा. छठवाँ वर्ग-परिच्चइ हि. परचै।

---

१ यह शब्द जल के सम्बन्ध में प्रयुक्त होता है। यह पानी को निथार जाता है।

१५८ पला या परा (भाग जाना)=सं० पलाय, प्रथम वर्ग पलायते, प्रा० पलाअइ या सकुचित पलाइ, हि० पलाय् या पराय्।

१५९ परिहर् (छोड़ना)=सं० परि-हृ, प्रथम वर्ग-परिहरति, प्रा० परिहरइ (हेमचन्द्र ४, २५९) हि० परिहरै।

१६० परोस् (खाना देना) सं० परि-विष्, प्रेरणार्थक-परिवेषयति, प्रा० परिवेसेइ या छठवाँ वर्ग-परिवेसइ, हि० परोसै (ओ इवे)

१६१ पसर् (फैला हुआ)=सं० प्र-सृ, प्रथम वर्ग-प्रसरति, प्रा० पसरइ (हेमचन्द्र ४,७७) हि० पसरै।

१६२ पसार् (फैलाना)=सं० प्र० सृ, प्रेरणार्थक, प्रसारयति, प्रा० पसारेइ या छठवें वर्ग में पसारइ, हि० पसारै।

१६३ पसीज् (Perspire)=सं० प्र—स्विद्, चतुर्थ वर्ग-प्रस्विद्यति, प्रा० पसिज्जइ (हेमचन्द्र ४,२२४) हि० पसीजै।

१६४ पसूज् (Stitch)=सं० प्रसिव्, चतुर्थ वर्ग—प्रसीव्यति, प्रा० पसुज्जइ (सम्भवत 'पसि विज्जइ' का सकुचित रूप) हि० पसूजै।

१६५ पहिनाव् या पिहनाव (पहनाना)=सं० पि-नह्, प्रेरणार्थक-पिनाह्यति, पिनहावेइ, या छठवा वर्ग पिनहावइ, हि० पिहनावै (न तथा ह् का विपर्यय हो गया) या पहिनावै (इ और 'अ' का विपर्यय)।

१६६ पहिर् (पहनना)=सं० परि धा, कर्मवाच्य-परिधीयते, प्रा० परिधेइ या परिधइ या परिहइ, हि० पहिरै (र और ह् का विपर्यय)।

१६७ पहिराव् (पहनाना)=सं० परिधा, प्रेरणार्थक-परिधापयति, प्रा० परिधावेइ या छठवा वर्ग—परिधावइ या परिहावइ, हि० पहिराव (र और ह् का विपर्यय)।

१६८ पहुँच् (पहुँचना)=सं० प्र-भू, प्रथम वर्ग प्रभवति, प्रा० पहुच्छइ या पहुच्चइ (हेमचन्द्र ४,३९०) हि० पहूछै, पहूचै, पहुँचै[१]।

१६९ पाड् (let fall)=सं० पत्, प्रेरणार्थक पातयति, प्रा० पाडेइ (हेमचन्द्र ४२२) या छठवें वर्ग में—पाडइ (हेमचन्द्र, तीन, १५३) हि० पाडै।

१७० पार् (Accomplish)=सं० पृ, प्रेरणार्थक- पारयति' प्रा० पारेइ, या छठवें वर्ग में पारइ (हेमचन्द्र, ४८६) हि० पारै।

१७१ पाल् (पालना)=सं० पा, प्रेरणार्थक-पालयति, प्रा० पालेइ या छठवें वर्ग में पालइ हि० पालै।

१७२ पाव् (प्राप्त करना)=सं० प्र—आप्, पचम वर्ग प्राप्नोति, प्रा छठवाँ वर्ग—पावइ (हेमचन्द ४,२३९) हि० पावै।

---

१ इसका निर्माण निरर्थक प्रत्यय 'स्क्' के आधार मे हुआ है। केवल इसी शब्द में 'स्क' 'च्छ' में परिवर्तित हो जाता है और पीछे महाप्राणत्व का लोप हो जाता है।

१७३ पिपस् (पिपसाना)—सं पपि या पि-पास प्रथम वर्ग पपिपासति प्रा पिपसइ हि पिपसै।

१७४ पी (पीना)—स पा प्रथम वर्ग पिबति प्रा पियइ (हेमचन्द्र ४१) हि पीवै।

१७५ पीख (चुभना)—सं पिप भविष्य-पेक्ष्यति (वर्तमान के भाव के साथ) प्रा पेक्खइ हि पीखै (ख के महाप्राणत्व का लोप हो गया।)

१७६ पीड़ (कष्ट होना)—सं पीड़ प्रथमवर्ग पीड़ते प्रा पीडइ हि पीड़ै।

१७७ पीस् (grind)—स पिष् सप्तम वर्ग पिनष्टि प्रा दशमवर्ग पिसेइ (हेमचन्द्र ४१८५) हि पीसै।

१७८ पुराव् (Fill, thread)—सं पृ प्रेरणार्थक-पूरयति प्रा पुरावेइ या छठवें वर्ग में-पुरावइ, हि पुरावै (या प हि में पिरावै भी मिलता है)

१७९ पूछ् (पूछना)—सं प्रछ् छठवां वर्ग-पृच्छति प्रा पुच्छइ (हेमचन्द्र ४९७) हि पूछै।

१८० पूछ या पोछ (wipe)—सं प्र—उछ प्रथम तथा छठवें वर्ग में—प्रोञ्छति प्रा पोछइ या पुछइ (हेमचन्द्र ४१ ५) हि पोंछै या पूछै।

१८१ पूज (पूजना)—सं पूज् दशम वर्ग किन्तु प्रथम वर्ग में भी पूजति प्रा पूजइ हि पूजै।

१८२ पइर् या पैर् (तैरना)—सं प्रतृ प्रथम वर्ग—प्रतरति या छठवें वर्ग—प्रतिरति प्रा पइरइ पूर्वी हि पइरै प हि पैरै।

१८३ पइस् या पस् (घुसना)—स प्र-विश् छठवें वर्ग में प्रविशति प्रा पविसइ (हेमचन्द्र ४ १८३) या पइसइ हि पइसै या पैसै।

१८४ पेल् (Squeeze out Shove)—सं पीड़ प्रथम वर्ग-पीड़ते प्रा पेल्लइ (हेमचन्द्र ४१८३) हि पेलै (सम्भवतः पिष्ट पेडु पेरड़ पेल्ल आदि की नाम धातु (Denominative) हो।

१८५ पोस् (पालना)—स पुष प्रथम वर्ग-पोषति प्रा पोसइ हि पोसै।

१८६ फट् या फूट् (burst)—स स्फट् भर्मवाच्य स्फट्यते प्रा फट्टइ हि फटै या फटै।

१८७ फल् (bear fruit)—स फल प्र थम—फलति प्रा फलइ (सप्तशतक१०) हि फलै (यह धातु स्फल तथा फल से समर्थित है)

१८८ फल् या फाल (फटना)—स स्फुट छठवां वर्ग—स्फुटति प्रा फलइ या फालइ (हेमचन्द्र ४१८२ सम्भवतः फल और फाल=टूटने की नामधातु, वररुचि ४१५ हेमचन्द्र २६२) हि फलै या फालै।[1]

[1] यह धातु स्वर क्रम में भी प्रयुक्त होती है जाय में फैलाना या पोसना देता देखिए हेमचन्द्र ४१७६ जहां फलइ विभक्ति का रुपान्तर [illegible] गया है।

१८९ फाड् (Cleave) = स० स्फट्, दशम वर्ग—स्फाटयति, प्रा० फाडेइ, या छटवें वर्ग में फाडइ (हेमचन्द्र १,१९८ २३२) हि० फाडे। हेमचन्द्र इसका संबंध 'पट्' धातु से जोडता है जिसका दशम वर्ग—पाटयति होता है।

१९० फाद् (Jump) = स० स्पद, प्रेरणार्थक-स्पंदयति, प्रा० फदेइ या छठवें वर्ग में फदइ, हि० फादै। (यह फँसाने के अर्थ में भी प्रयुक्त होता है, सकर्मक रूप में भी प्रयोग होता है। इसकी व्याख्या यौगिक धातुओं के साथ भी की गई है। इस धातु का मूल अर्थ हिलाना है। हेमचन्द्र 'फदइ' को इसी मूल अर्थ में प्रयोग करना दीखता है (हेमचन्द्र, ४,१२७) इसका संस्कृत रूप 'स्पदते' है। हेमचन्द्र इसका पर्यायवाची 'चुलचुलाइ' भी देता है। इसका प्रयोग भी हिन्दी में, चुलचुलै, चुलबुलै, चुलमुलै, चुलचुलावै, आदि रूपों में अब भी है।

१९१ फाल् (कूदना) = स० स्फन् (हिलाना) प्रेरणार्थक—स्फालयति, प्रा० फालेइ, या छठवें वर्ग में—फालइ, हि० फालै सम्भवत यह धातु न० १८९ से संबंधित है (हेमचन्द्र ४,१९८ में इसे 'फाडइ' का दूसरा रूप फालेइ मानते है।

१९२ फिट् (be paid off, be discharged) = स० स्फिट्ट, दशम वर्ग, स्फिट्टयति, प्रा० फिट्टइ (हेमचन्द्र ४,१७७, यह 'भ्रंश' से संबंधित बताया गया है) हि० फिटै।

१९३ फुट्, फूट् (बढना, टूटना, तितर बितर होना) = स० स्फुट, कर्मवाच्य—स्फुट्यते, प्रा० फुट्टइ (वररुचि, ८,५३, हेमचन्द्र ४,१७७, जहा यह भ्रंश का स्थानापन्न बताया गया है, जिसका अर्थ 'टूटता हुआ' है, हि० फुटै या फूटै (इसके संबंध में धातु न० १९४ देखिए)

१९४ फुल् व फूल् (blossom) = स० स्फुट, छठवा वर्ग—स्फुटति, प्रा० फुट्टइ या फुड्ड (वररुचि ८,५३) या फुल्लइ (हेमचन्द्र ४,३८७) हि० फुलै या फूलै।

१९५ फेर् या फिर् (घुमाना) स० परि+इ, द्वितीय वर्ग पयति, प्रा० फेरेइ या फेरइ ('प' 'फ' के रूप में परिवर्तित हो गया, 'अयं' 'एर' में बदल गया, जैसे पर्यंत का पेरतो होता है) हि० फेरै।

१९६ फैल् (Spread) = स० स्फिट, दशम वर्ग—स्फेटयति, प्रा० फेडेइ, या छठवा वर्ग—फेडइ (हेमचन्द्र ४,३५८, हेमचन्द्र ४,१७७) ने 'फिडइ' को 'भ्रंश' का स्थानापन्न माना है) या फेलइ स० धातु फेल्) हि० फैलै

१९७ फो (खोलना) = स० प्र-मुच्, छठवा वर्ग – प्रमुञ्चति, प्रा० पमुअइ (हेमचन्द्र, ४,९१) हि० फोऐ पोऐ = पउए)

१९८ फोड् (तोडना) स० स्फुट्, प्रेरणार्थक—स्फोट्यति, प्रा० फोडेइ, (हेमचन्द्र ४,३५०) या छठवां वर्ग—फोडइ, हि० फोडै

१९९ बच् (go away) स० व्रज्, प्रथम् वर्ग—व्रजति, प्रा० वच्चइ, (वररुचि ८,४७) हि० बचै। (अधिक संभावना 'वच' धातु से संबंधित होने की है) अथवा यह कर्म वाच्यवृत्यते (स० धातु वृत्) से है।

२ बज् बाज् (ध्वनि) = सं वद्, प्रेरणार्थक कर्मवाच्य—वाद्यते प्रा० वज्जइ (हेमचन्द्र ४ ४ १) हि बजै या बाजै।

२ १ बझ् (फंसना) = स बध् कर्मवाच्य—बध्यते प्रा बज्झइ (हेमचन्द्र २ २६ २४७) हि बझ।

२ २ बट् (बटना या बाटना) = स वट्, कर्मवाच्य—वट्यते प्रा वट्टइ, हि बटै।

२ ३ बड़ (पूर्वी हि बाई) = बढ़ना सं वृध्, प्रथम वर्ग—वर्धते प्रा वड्ढइ (वररुचि ८ ४४) हि बढ़ै पूर्वी हि बाढ़ै।

२ ४ बढ़ाव् (बढ़ाना) = सं वृध् प्रेरणार्थक वर्धयति प्रा वड्ढावेइ या छठवां वर्ग वड्ढावइ हि बढ़ावैं (त्रिविक्रम ३ १/१३२ मे वड्ढाविअ = समापित है)

२ ५ पढ़ाव (बहुना दिखाना) = स वृत प्रेरणार्थक—वर्तयति प्रा वत्तावेइ, छठवा वर्ग—वत्तावइ हि वतावैं।

२ ६ बध् (मारना) = स वध या (वाध्, प्रथम वर्ग—वाधते) प्रा बधइ, हि बधै।

२ ७ बन् (be made) = स वन कर्मवाच्य—वन्यते, प्रा वनम हिन्दी बनै

२ ८ बर् (वारी करना) = सं वृ पचम वर्ग—वृणोति प्रथम वर्ग में वरति भी प्रा — वरइ (वररुचि ८ १२) हि बरै।

२ ९ बरिस् या बरस् = स वृष् प्रथम वर्ग—वर्षति प्रा वरिसइ (वररुचि ८ ११) पूर्वी हि बरिसै प हि बरसै।

२१ बस् (जलना) = स ज्वस प्रथमवर्ग-ज्वलति प्रा वसइ (हेमचन्द्र ४ ४१६ वसति) हि बसै।

२११ बस् (dwell) = स वस् प्रथमवर्ग-वसति प्रा वसइ हि बसै।

२१२ बह् (बहना) = स वह् प्रथमवर्ग-वहति प्रा वहइ (हेमचन्द्र १ १८) हि बहै।

२१३ बांच् (Recite read) इसकी व्याख्या यौगिक धातुओं में देखिए

२१४ बाछ (इच्छा करना) = स वांछ प्रथम वर्ग-वाछति प्रा वांछइ (त्रिविक्रम ११ १११) हि बांछ।

२१५ बाँध् (बाँधना) = स बध् नवमवर्ग-बध्नाति प्रा छठवां वर्ग-बधइ (हेमचन्द्र १ १८७ हि बाँधै।

२१६ बाल् या बार् (जलाना Kindle) = स ज्वल् प्रेरणार्थक-ज्वालयति प्रा बालेइ या बालइ प हि बालै पूर्वी हि बारै।

२१७ बास् (सु गधि) = स वास् दशमवर्ग-वासयति प्रा वासेइ या छठवा वर्ग-वासइ हि बासै।

२१८ बिक् (बिकी) स = वि + क्री (बेचना) प्रेरणार्थक-विक्रीयते प्रा विक्केइ या बिक्कइ हि बिकै।

२१९ बिगड़ या पूर्वी हि बिगर् = स वि-घट्, प्रथमवर्ग-विघटते प्रा विग्गडइ (हेमचन्द्र ४ ११२) हि बिगड़ै या बिगरै।

२२० बिगाड् (नष्ट करना) स० वि-घट्, प्रेरणार्थक-विघाटयति, प्रा० विगाढेइ या छठवावर्ग विगाढइ, हि० बिगाड़ै ।

२२१ बिचार्-(सोचना) स० वि-चर्, प्रेरणार्थक-विचारयति, प्रा० विचारेइ या (छठवा वर्ग) विचारइ, हि० बिचारै ।

२२२ बिडर् (बिखरना)=स० वि-दृ, नवमवर्ग-विदृणाति प्रा० प्रथम वर्ग बिडरइ, हि० बिडरै ।

२२३ बिडार् (दूरहटाना)=स० वि-दृ, प्रेरणार्थक-विदारयति, प्रा० बिडारेइ या (छठवाँवर्ग बिडारइ, हि० बिडारै ।

२२४ बितर् (Grant)=स० वि-तृ, प्रथमवर्ग-वितरति, प्रा० वितरइ, हि० बितरै ।

२२५ बियार् (फैलाना)=स० वि-स्तृ, प्रेरणार्थक-विस्तारयति, प्रा० वित्यारेइ या (छठवाँ वर्ग) वित्थारइ, हि० बियारै ।

२२६ बिराव् (Mock)=इसकी व्याख्या यौगिक धातुओ मे देखिए ।

२२७ बिलख् या बि-लक्=स० वि-लक्ष्, दशमवर्ग-विलक्षयति, प्रा० विलक्खेइ या (छठवा वर्ग) विलक्खइ, हि० बिलखै या बिलकै ।

२२८ बिलग् (अलग)=स० वि-लग्, कर्मवाच्य-विलग्यते (कर्तृवाच्य के भाव सहित) प्रा० विलग्गइ (वररुचि ८,५२) हि० बिलगै ।

२२९ बिलग (Ascend)=स० वि-लघ्, प्रथमवर्ग-विलघति, प्रा० विलघइ, हि० बिलगै (बिलघै के स्थान पर)

२३० बिलस् (प्रसन्न होना), स० वि-लस्, प्र० वर्ग-विलसति, प्रथम विलसइ, हि० बिलसै ।

२३१ बिलव् (अन्तर्धान हो जाना) स०=वि-ली, प्रेरणार्थक-विलापयति, प्रा० विलावेइ या (छठवा वर्ग) विलावइ, हि० बिलावै ।

२३२ बिहर् (enjoy one' S self)=स० वि-हृ, प्रथमवर्ग-विहरति, प्रा० विहरइ, (हेमचन्द्र ४,२५९, यहाँ यह स० क्रीडति का स्थानापन्न बताया गया है) हि० बिहरै ।

२३३ बिहाय् या बिहा (छोडना)=स० वि-हा, तृतीयवर्ग-विजहाति प्रा० प्रथमवर्ग-विहाअइ या विहायइ या (सकुचित) विहाय, हि० बिहायै या बिहाय (वररुचि ८,२६)

२३४ बिसर (भूलना)=स० विस्मृ, प्रथमवर्ग-विस्मरति, प्रा० विसरइ (हेमचन्द्र ४,७४) हि० बिसरै ।

२३५ बीझ (फाडना, तोडना)=स० भिद्, कर्मवाच्य-भिद्यते (कर्तृवाच्य के भाव सहित प्रयुक्त) प्रा० भिज्जइ, हि० बीझै (भीजै के स्थान पर)

२३६ बीत (गुजरना) देखिए यौगिक धातुएँ ।

२३७ बीन् या बिन् (चुनना) स० श्री, नवमवर्ग-श्रीणाति या विणाति, प्रा० (छठवा वर्ग) वीणइ या विणइ, हि० बीनै या बिनै ।

२३८ बुझ् (बुझना)—सं वि-अव-ध्मा प्रथमवर्ग-व्यवध्मायति प्रा वोज्झेइ, या वोज्झइ हि बुझै।

२३९ बड़ बूड़ (डूबना)—सं बुड छठवा वर्ग बुडति प्रा बुड्डइ (हेमचन्द्र ४ १ १) हि बुड़ै या बूड़ै या प हि बड़ै बूड़ै।

२४० बुत् (बुझना)—सं वि-आ-वृत् (समाप्त होना) प्रथम वर्ग-व्यावर्तते प्रा वावत्तइ या वोत्तइ या वुत्तइ, हि बुतै या बतौ।

२४१ बुहार् (झाड़ना)—सं वि-अव-ह्र प्रेरणार्थक-व्यवहारयति प्रा वोहारेइ या छठवा वर्ग वोहारइ, हि बुहारै।

२४२ बूझ् (समझना)—स बुध चतुर्थवर्ग बुध्यते प्रा० बुज्झइ (वररुचि ८ ४८) हि बूझै।

२४३ बेच (बेचना)—स व्यय (धोखा देना) छठवा वर्ग-नियति कर्मवाच्य व्ययते (कर्तृ वाच्य भाव सहित प्रयुक्त) प्रा वेच्चइ (हेमचन्द्र ४ ४१९ त्रिविक्रम ३ १ ४) पु० हि बेच या इसकी व्युत्पत्ति इस प्रकार भी हो सकती है—सं वि+अति+इ (व्यय करना) द्वितीय वर्ग-व्यत्येति प्रा वेच्चेइ या वेच्चइ?

२४४ बेढ़ (घेरना) यौगिक धातुएँ देखिए।

२४५ बस या बइस (बैठना)—स उपविश छठवा वर्ग-उपविशति प्रा उवविसइ हि० बइसै या बैसै।

२४६ बो (बोना)—स वप् प्रथमवर्ग-वपति प्रा वोवइ या वावइ हि बोए।

२४७ बोर् (Immerse)—स बुड प्रेरणार्थक-बोडयति प्रा बोडेइ या (छठवा वर्ग) बोडइ हि बोरै।

२४८. बोलाव् या बुलाव् या बलाव् (बुलाना)—सं वद्, प्रेरणार्थक- वादयति प्रा वोल्लावेइ या (छठवा वर्ग) वोल्लावइ हि बोलावै।

२४९ बोध् (wheedle) स बुध, प्रेरणार्थक-बोधयति प्रा बोधेइ या (छठवां वर्ग बोधइ हि बोध।

२५० बोल् (बोलना)—स वद् प्रथम वर्ग वदति प्रा वोल्लइ (हेमचन्द्र ४ २) या बोलइ (Cowell's Edition of प्राकृत प्रकाश ११) हि बोलै।
(cf स २४६ वप्—बोए् वद्—बोल्)।

२५१ भख (खाना)—स भक्ष प्र वर्ग भक्षति प्रा भक्खइ हि भखै।

२५२ भज् (पूजा करना)—स०—भज्, प्रथम वर्ग भजति प्रा भजइ हि भजै।

२५३ भज् या भाज् (भागना)=स भञ्ज् (तोड़ना) कर्मवाच्य भज्यते (कर्तृ वाच्य भाव सहित) प्रा भज्जइ हि भजै या भाजै।

२५४ भंज् (तोड़ना)—स भञ्ज् सप्तम वर्ग—भनक्ति प्रा छठवा वर्ग—भंजइ (हेमचन्द्र ४ १ ६) हि भंजै।

२५५ भन् (बोलना)—स भण प्रथम वर्ग भणति प्रा भणइ (हेमचन्द्र ४ २३९) हि भनै।

२५६ भर् (भरना) = स० भृ, तृतीय वर्ग–बिभर्त्ति तथा प्रथम वर्ग भरति, प्रा० भरइ (सप्तशतक-हाल २८८ भरति) हि० भरै ।

२५७ भव् या भौ (चक्कर खाना) = स० भ्रम्, प्र० वर्ग-भ्रमति, प्रा० भमइ, (हेमचन्द्र ४,१६१) या भवइ (हेमचन्द्र ४,४०१) हि० भवै, या भौए ।

२५८ भस् (तैरना) = स० भृ ग, प्रथम वर्ग-भृ शति, प्रा० भसइ, हि० भसै ।

२५६ भाल् (देखना) = स० भल्, दशमवर्ग-भालयते, प्रा० भालेइ, या छठवा वर्ग-भालइ हि० भालै ।

२६० भास् (प्रतीत होना) = स० भास्, प्रथम वर्ग—भासते, प्रा० भासइ (हेमचन्द्र ४,२०३) हि० भासै। (प्राकृत में भिसइ भी मिलता है, हिन्दी मे इसका रूप भिसल् है)

२६१ भीज् (be affected) = स० भिद् (तोडना) कर्मवाच्य—भिद्यते, प्रा० भिज्जइ, हि० भीजै । अथवा—स अभि-अर्द, कर्मवाच्य अभ्यर्द्यते, प्रा० अभिज्जइ, हि० भीजै ।

२६२ भीज् (be wet) = देखिए यौगिक धातुए ।

२६३ भुज् (खाना) = स० भुज्, सप्तमवर्ग—भुनक्ति प्रा० छठवा वर्ग—भुजइ (हेमचन्द्र ४,११०) हि० भुजै ।

२६४ भून् (भूनना) — देखिए यौगिक धातुए ।

२६५ भेड (बन्दकरना) = बेढ के स्थान पर । देखिए २४४ ।

२६६ भेंट (मिलना) = स० अभि —अट्, प्रथमवर्ग—अभ्यटति, प्रा० अब्भट्टइ, हि० भेंटै (आरम्भिक 'अ' का लोप हो गया 'इ' के स्थान पर 'ए' आ गया ।

२६७ मच् (उठना, उत्तेजित होना) = स० मच् या मच् कर्मवाच्य—मच्यते, प्रा० मच्चइ (हेमचन्द्र ४,२३०, जहा इसका सबध संस्कृत धातु 'मद्' से जोडा गया है) हि० मचै । इस धातु से अनेक हिन्दी सज्ञाओ का जन्म हुआ है, जिनका अर्थ 'उठे हुए' के भाव में है । जसे माचा, मचा, मचान, या मचाता (बडा पलग या रगमच) मचिया—(छोटी खाट) मच् (सुस्ती) इस से अनेक यौगिक धातुओ का भी जन्म हुआ है जैसे 'मचमच्' (खाट के जोडो की ध्वनि) मचक् (जोडो का दर्द) मचकाव् (पलक मारना) मचल्, या मचलाव् ।

२६८ मज् (साफ करना) = स० मृज, द्वितीय वर्ग - मार्ष्टि तथा प्रथम वर्ग—मृजति, प्रा० मजइ, हि० मजै ।

२६६ मढ, (cover) = स० मृद्—देखिए यौगिक धातुए ।

२७० मन् (be propitiated) = स० मन्, प्रेरणार्थक कर्मवाच्य, मान्यते, प्रा० मन्नइ हि० मनै (देखिए २७७) ।

२७१ मर् (मरना) = स० मृ, छठवा वर्ग—म्रियते, वैदिक प्रथम वर्ग—मरति, प्रा० मरइ (वररुचि ८,१२) हि० मरै ।

२७२ मल् (रगडना) = स० मृद, नवम वर्ग—मृद्नाति, प्रा० छठवॉ वर्ग—मलइ (वररुचि ८,५०) हि० मलै ।

२७३ मह (बिलोना)—सं मथ् प्रथम वर्ग—मथति प्रा महइ, हि महै।

२७४ माग (मांगना)—स मार्ग दशम वर्ग—मार्गयति तथा प्रथम वर्ग—मार्गति प्रा मग्गइ (सप्तशतक-७१) हि मांगै (cp स धातु मृग् चतुर्थ वर्ग—मृग्यति प्रा मग्गइ किन्तु माग धातु 'मार्ग' अधिक सम्भव मूल है।

२७५ मांज (Scour)—सं मार्ज दशम वर्ग—मार्जयति (या धातु मृज् दशम वर्ग—मार्जयति देखिए २७४) प्रा० मज्जेइ या छठवां वर्ग मंजइ, हि मांजे।

२७६ माड या माड (रगड़ना)—सं मृद् नवम वर्ग—मृद्नाति या प्रथम वर्ग—मर्दति प्रा मड्डइ (हेमचन्द्र ४ १२६) हि माडे or माडै।

२७७ मान् (आदर)—सं मन् प्रेरणार्थक—मानयति प्रा मानेइ, या छठवां वर्ग—मानइ हि मानै।

२७८ माप् or नाप् (मापना) स मा प्रेरणार्थक कर्मवाच्य माप्यते (प्रयोग कर्तृ वाच्य के भाव सहित) प्रा माप्पइ, हि मापै। 'नाप' या तो माप्' का भ्रष्ट रूप है अथवा यह इसी प्रकार सं प्रेरणार्थक कर्मवाच्य 'ज्ञाप्यते' (धातु-ज्ञा) से व्युत्पन्न हुआ है) प्रा नप्पइ, हि नापै।

२७९ मार् (पीटना या मारना)—सं मृ प्रेरणार्थक—मारयति प्रा मारिइ (हेमचन्द्र ४ ३३७) या छठवां वर्ग—मारइ (हेमचन्द्र १ १२१) हि मारै।

२८० मिल् (मिलना)—स मिल्, छठवां वर्ग—मिलति प्रा मिलइ (हेमचन्द्र ४ ३३२) हि मिलै।

२८१ मिस् (be pulverised)—स मृष् छठवां वर्ग—मृषति प्रा मिसइ, हि मिस।

२८२ मीच् या मींच् (पलक बन्द करना)—सं मिष् भविष्य—मेक्ष्यति (वर्तमान के भाव सहित) प्रा मेच्छइ व मिच्छइ, हि मीचैं या (भ्रष्ट) मीचै (देखिए १७५)

२८३ मीज् या मींज (रगड़ना)—सं मृज् द्वितीय वर्ग—मार्ष्टि या प्रथम वर्ग मृ र्जति प्रा मिंजइ हि मींजै या मीजै।

२८४ मूड (Shave)—स मुड प्रथम वर्ग—मुडति प्रा मूडइ (हेमचन्द्र ४ ११५) हि मूडै।

२ ५ मूस् (Steal)—स मुष् प्रथम वर्ग—मुषति, प्रा मूसइ (त्रिविक्रम २,४ ६६) हि मूस।

२८६ मोह (Allure)—स मुह् प्रेरणार्थक मोहयति प्रा मोहेइ या छठवां वर्ग—मोहइ, हि मोहै।

२८७ रख् (Keep)—स रक्ष् प्रथम वर्ग—रक्षति प्रा रक्खइ (हेमचन्द्र ४४११) हि रखें।

२८८ रच् (प्रदर्शन बनाना)—सं रच्, कर्मवाच्य रच्यते (कर्तृ वाच्य भाव सहित) प्रा० रचइ (हेमच० ४४२२ ३१ रचयति मजमरव ११२ एजिम रचित) हि रचै।

२८९ रम् (घूमना)=स० रम्, प्रथम वर्ग--रमते, प्रा० रमइ (हेमचन्द्र ४,१६८) हि० रमैं।

२९० रह् (Stop remain)=स० रक्ष्, कर्मवाच्य-रक्ष्यते, प्रा० रक्खइ, हि० रहै (रहैं के स्थान पर) इसकी व्युत्पत्ति कुछ सदेहपूर्ण है। बीम्स महोदय ने (III, ४०) इसका सबंध स० धातु 'रह्' से जोड़ा है, जिसका एक बिल्कुल ही भिन्न अर्थ रेगिस्तान है। 'रक्ष' से इसकी व्युत्पत्ति अधिक सम्भावित है। इसका समर्थक मराठी रूप राह=राख से होता है।

२९१ राज् (शोभित)=स० रज व रज् चतुर्थ वर्ग--रज्यति, प्रा० रज्जइ, हि० राजैं।

२९२ राघ या रीध (Cook)=स० रध्, प्रेरणार्थक--रन्धयति, प्रा० रधेइ या छठवा वर्ग--रधइ, हि० रांधैं (भ्रष्ट) रीधैं।

२९३ रिस् (क्रोधित होना)=स० रिष्, चतुर्थ वर्ग या कर्मवाच्य--रिष्यते, प्रा० रिस्सइ, हि० रिसैं।

२९४ रुच् (रुचि पूर्ण होना)= स० रुच्, कर्मवाच्य-रुच्यते, प्रा० रुच्चइ, (हेमचन्द्र ४,३४१) हि० रुचैं।

२९५ रुप् (be fixed)=स० रूह्, प्रेरणार्थक कर्मवाच्य रोप्यते, प्रा० रोप्पइ या रुप्पइ, हि० रूपैं।

२९६ रुस् या रूस (क्रोधित होना)=स० रुष्, चतुर्थ वर्ग रुष्यति प्रा० रुस्सइ, या रूसइ (वररुचि ,८,४६) हि० रूसैं या रुसैं। (देखिए-३०२)

२९७ रुद् या रूद या रोद या रौंद (कुचलना)=सम्भवत २९८ का भ्रष्ट रूप है।

२९८ रुध, रूंध, रोध, रोध (Enclose restrain)=स० रुध्, सप्तमवर्ग--रुणद्धि, प्रा० रुधइ (वररुचि-८७४६) हि० रुधैं, रूधैं।

२९९ रेंग् (रेंगना)=स० रिंग्, प्रथम वर्ग--रिंगति, प्रा० रिंगइ या रिंगाइ, (हेमचन्द्र, ४,२५९) हि० रेंगैं।

३०० रो (रोना)=स० रुद्, द्वितीय वर्ग--रोदिति, वैदिक भी छठवा वर्ग रुदति, प्रा० रुवइ (हेमचन्द्र ४,२२६,२३८) या रुवाइ (सप्तशतक ३११) या प्रथम वर्ग--रोवइ (हेमचन्द्र ४,२२६, २३८) या रोग्रइ (क्रमद ईश्वर, प्राकृत ग्रामर, (४,६६) हि० रोवैं, रोऐं।

३०१ रोल् (roll plan)=स० लुल्, प्रथमवर्ग लोलति प्रा० लोलइ, हि० रोलैं। इस प्रकार की अनेक धातुएँ हैं जो परस्पर सम्बद्ध हैं और जिनके अर्थ भी प्राय समान हैं जैसे रुट्, रूड्, रोड्, रौड्, लुट, लुड्, लुल, लोड् आदि।

३०२ रोस (क्रोधित होना,=स० रुष्, वैदिक प्रथमवर्ग--रोषति प्रा० रोसइ हि० रोसैं (देखिए २९६ भी)

३०३ लख् (देखना)=स० लक्ष् प्रथम वर्ग--लक्षते, प्रा० लक्खइ, हि० लखैं।

३०४ लग् (be applied)=स० लग्, कर्मवाच्य--लग्यते, प्रा० लग्गइ (वररुचि, ८,५२) हि० लगैं।

३२३ सट् या सट् (be combined) = सं० सम्-स्था, कर्मवाच्य-सम्स्थीयते (कर्तृवाच्य के भाव सहित) प्रा० सट्टेइ या छठवां वर्ग-सट्टइ, हि० सठे या सटे।

३२४ सड् या सर् (rot) = सं० सद् (या सद्) प्रथम वर्ग-सीदति, किन्तु वैदिक भी-सदति, प्रा० सडइ (हेमचन्द्र ४,२१९) प० हि० सडे, पू० हि० सरे।

३२५ सताव् (persecute) = सं० सम्-तप्, प्रेरणार्थक-सतापयति, प्रा० सतावेइ या (छठवां वर्ग) सतावइ, हि० सतावे।

३२६ सद् (चूना) = सं० स्यद् प्रथम वर्ग-स्यन्दते, प्रा० सदइ, हि० सदे।

३२७ समार् (Sustain) = सं० सम्-भृ, प्रेरणार्थक-सम्भारयति, प्रा० सभारेइ, या (छठवां वर्ग) सभारइ, हि० सभार्ले। नाम धातु सम्भार।

३२८ समाव् (be contained) = सं० सम्-आप्, पचम वर्ग-समाप्नोति प्रा० दशमवर्ग, समावेइ (हेमचन्द्र ४,१४२) या छठवा वर्ग-समावइ, हि० समावे।

३२९ समझ् या समझ् (समझना) = सं० सम्-बुध्, चतुर्थ वर्ग-सम्बुध्यते, प्रा० सबुज्झइ, पू० हि० समुझै प० हि० समझे।

३३० सर् (Issue, be ended) = सं० सृ, प्रथम वर्ग-सरति प्रा० सरइ (वररुचि ८, १२) हि० सर।

३३१ सराह (प्रशसा करना) = सं० श्लाघ्, प्रथम वर्ग-श्लाघते, प्रा० सलाहइ (हेमचन्द्र, २, १०१-में सलहइ है) हि० सराहे।

३३२ सल् (pierce) = सं० शल् या सल्, प्रथम वर्ग-शलति या सलति, प्रा०-सलइ, हि० सले।

३३३ सवार् (तैयार करना) = सं० सम्-वृ, प्रेरणार्थक-सवारयति, प्रा० सवारेइ, या (छठवां वर्ग) सवारइ, हि० सवारे।

३३४ सह् (सहना) = सं० सह, प्रथम वर्ग-सहते, प्रा० सहइ (हेमचन्द्र १,६) हि० सहे।

३३५ सहर् (arrange) = सं० सम्-हृ, प्रथम वर्ग-सहरति, प्रा० सुहरइ (हेमचन्द्र ४, २५९) = लैं० सवृणोति, हेमचन्द्र ४,८२ में साहरइ भी है) पू० हि० सहरै।

३३६ साध् (settle) = सं० साध्, प्रेरणार्थक साधयति, प्रा० साधेइ, या (छठवां वर्ग) साधइ, हि० साधे। रूप साह हिन्दी में नहीं होता है।

३३७ सार् (Accomplish) = सं० सृ, प्रेरणार्थक-सारयति, प्रा० सारेइ, या (छठवा वर्ग) सारइ हि० सारे।

३३८ साल् (pearce) = सं०-शृ, प्रेरणार्थक शारयति, प्रा० सारेइ, या (छठवा वर्ग) सारइ, हि० साले या 'शाल्' का प्रेरणार्थक देखो ३३२।

३३९ सांस् (Threaten, distress) = सं० त्रस्, प्रेरणार्थक—त्रसयति, प्रा० ससेइ या छठवांवर्ग—ससइ, (हेमचन्द्र ४,१६७ जहा पर संसते भी है) हि० सांसे।

३४० सी (Sew) = सं० सिव्, चतुर्थवर्ग—सीव्यति, प्रा० (छठवांवर्ग)—सिवइ या सिव्वइ, हि० सिए। (हेमचन्द्र ४,२३० सिव्वइ भी देता है, जिससे हिन्दी सीवै बनता है पर यह रूप अब नहीं रहा, दूसरा रूप सिव्वइ हिंदी सीवैं)

१४१ सीख (learn)—सं शिक्ष् प्रथम वर्ग-शिक्षते प्रा (सिक्खइ) (सप्त शतक १५३) हि सीखे।

१४२ सीख् या सीख—सं शिक्ष् प्रेरणार्थक -शिक्षयति प्रा सिक्खइ (हेमचन्द्र ४२११) या सिक्खइ (हेमचन्द्र ४२१) हि सीखे। हिन्दी सीखे सीखे या सीखै (वररुचि २४१ सत —सप्त)

१४३ सीझ् (Exude, sweat)—सं० स्विद्, चतुर्थवर्ग -स्विद्यति प्रा० सिज्जइ (हेमचन्द्र ४ २२४) हि सीझे (१४४ भी देखिए)।

१४४ सीझ् (Seethe, boil, sweat) सं सी (या स्ना) कर्मवाच्य-सीयते प्रा० सिज्जइ, हि सीझै।

१४५ सीझ् (be received be liquidated)—सं सि कर्मवाच्य-सीयते प्रा सिज्जइ हि सीझै।

१४६ सुधार् (सजाना)—सं सु-धृ प्रेरणार्थक-सुधारयति प्रा सुधारेइ या (छठवाँ वर्ग) सुधारइ हि० सुधारै।

१४७ सुन् (सुनना) सं श्रु पञ्चमवर्ग शृणोति प्रा छठवाँवर्ग -सुणइ (वररुचि ८ ५६) हि सुनै।

१४८ सुमर् (याद करना)—सं स्मृ प्रथमवर्ग -स्मरति प्रा सुमरइ (वररुचि ८ १८) हि सुमरै।

१४९ सुहाव् (अच्छा लगना)—सं शुभ् दशमवर्ग-शुभयति प्रा सुहावेइ (सप्त शतक १६६) या (छठवाँ वर्ग) सुहावइ हि सुहावै।

१५० सूंघ (सूँघना)—सं सम्-आ घ्रा प्रथमवर्ग समाजिघ्रति (या द्वितीय) वर्ग-समाघ्राति प्रा समग्घेइ या स समग्घइ, हि सूंघे।

१५१ सूज् (Swell)—सं शिव कर्मवाच्य-शूयते प्रा सुज्जइ हि सूजै।

१५२ सूझ (Appear)—सं शुध् चतुर्थ वर्ग शुध्यति प्रा सुज्झइ (हेमचन्द्र ४ २१७) हि सूझै।

१५३ सेट् (Irrigate)—सं स्यन्द् प्रेरणार्थक-स्यन्दयति प्रा सिंचेइ या (छठवाँ वर्ग) सिंचइ हि सींचै।

१५४ सेव् या सेइ (serve) सं सेव् प्रथम वर्ग-सेवते प्रा सेवइ (हेमचन्द्र ४ १६६) हि सेवै या सेइ।

१५५ सोध् (शोध करना या साधना)—सं शुध् कर्मवाच्य-शुध्यते (प्रयोग कर्तृवाच्य के अर्थ लिए हुए) प्रा सुज्झइ हि सोधै।

१५६ सोह् (चमकना)—सं शुभ् प्रथम वर्ग—शोभते प्रा० सोहइ (हेमचन्द्र १ १८७) हि सोहै।

१५७ सौंप् (deliver)—सं सम्—अर्प् प्रेरणार्थक—समर्पयति; प्रा समप्पेइ या पाँचवाँ वर्ग—समप्पइ हि सौंपै।

१५८ हन् (Kill) सं हन् प्रथम वर्ग-हन्ति किन्तु वैदिक की प्रथम वर्ग-हनति प्रा हणइ (हेमचन्द्र ४ ४१८) हि हनै।

३५६ हर् (Take away) = स० हृ, प्रथमवर्ग—हरति, प्रा० हरइ (हेमचन्द्र ३,२३४) हि० हरँ।

३६० हरिस् या हरस् (be glad) = स० हृष् प्रथम वर्ग—हर्षति, प्रा० हरिसइ, (वररुचि, ८,११ (सम्भवत नाम हरिस = हर्ष) पू० हि० हरिसँ, प० हि० हरसे।

३६१ हलप् (Toss about) स० ह्लृ, प्रेरणार्थक कर्मवाच्य—ह्लाप्यते प्रा० हलप्पइ, हि० हलपँ।

३६२ हवा (Scream) = स० ह्वे, प्रथमवर्ग ह्वयति, प्रा० छठावर्ग—हवाअइ या (सकुचित) हवाइ, हि० हवाय्।

३६३. हस्, हाँस् (laugh) = स० हस्, प्रथम वर्ग—हसति, प्रा० हसइ (त्रिविक्रम २,४,६६) या हस्सइ (कर्मवाच्य) हि० हँसे या हाँसे।

३६४ हाँप् या हाँफ् (blow) = स० ध्मा, प्रेरणाथक ध्मापयति, प्रा० धपेइ या छठवाँ वर्ग धँपइ या हपइ, हि० हाँपे या हाफैं।

३६५ हाल् (Shake) = स० ह्वल्, कर्मवाच्य—ह्वल्यते (प्रयोग कर्तृवाच्य का भाव लिए हुए) प्रा० हल्लइ, हि० हालैं।

३६६ हिल् (हिलाना) = स० ह्वृ, प्रथमवर्ग—ह्वरति, प्रा० छठवाँवर्ग—हिरइ या हिलइ, हि० हिल।

३६७ हुन् (Sacrifice) = स० धू, पचमवर्ग धुनोति, प्रा० छठवाँवर्ग—धुणइ या हुणइ (हेमचन्द्र ४,२४१, जहाँ इसका सबध सस्कृत धातु 'हु' से बताया गया है) हि० हुनैं।

३६८ हूल (drive) स० हुड (go) प्रेरणार्थक-हुडयति, प्रा० हूडेइ, या छठवाँ वर्ग—हूडइ, हि० हूलैं।

३६९ हो (be) = स० भू, प्रथम वर्ग—भवति, प्रा० भवइ या हुवइ या हवइ, या होइ (हेमचन्द्र ४,६०) हि० होय।

हिन्दी-धातु-संग्रह

(खंड २)

आ—यौगिक-धातुएँ

१ अटक् (संयुक्त धातु)=सं० अट्ट+कृ, प्रा० अट्टकेइ या अट्टक्कइ, हि० अटकै।

२ उचक् (संयुक्त धातु)=उठना=सं० उच्च+कृ, प्रा० उच्चक्केइ या उच्चकइ, हि० उचकै।

३ उबक (संयुक्त धातु)=सं० उद-वभ्+कृ, प्रा० उव्वक्केइ या उव्वक्कइ, हि० उबकै।

४ ऊक या ओक (Vomit)=संयुक्त धातु=सं० वम+कृ, प्रा० वमक्केइ या वमक्कइ, अपभ्रंश—प्रा० वर्वक्कइ, हि० ओकै या ऊकै।

५ उखड़् (derivative)—कर्मवाच्य या अकर्मक रूप है उखाड़।[1] (६)।

६ उखाड़् (नाम धातु) या उखेड़=सं० भूतकालिक कृदन्त-उत्कृष्ट, प्रा० उक्कड्डइ (हेमचन्द्र ४,१८७) हि० उखाड़ै या उखेड़ै या उकेढै।[2]

७ ओढ़् (नाम धातु)=सं० उपवेष्ट, प्रथम वर्ग-उपवेष्टते, प्रा० ओवेड्डइ (हेमचन्द्र ४, २२१) हि० ओढै। आवे से सकुचित 'ओ' धातु 'विश' का भूतकालिक कृदन्त।

८ कड़क् (संयुक्त धातु) (Crackle, thunder)=सं० कर्द+कृ, प्रा० कड्डक्केइ या कड्डक्कइ, हि० कड़कै।

९ कमाव् (नाम धातु) earn=सं० संज्ञा-कर्म, प्रा० कम्मावेइ या कम्मावइ (हेमचन्द्र, ४, १११ में कम्मवइ है तथा यह धातु 'उपभुज्' का स्थानापन्न बताया गया है)।[3] हि० कमावै।

---

१ 'अवें या अम के स्थान पर औ' देखिये—हार्नले—तुलनात्मक व्याकरण—१२२

२ 'उकाढै के स्थान पर उखाड़ै'—देखिये, हार्नले—तुलनात्मक व्याकरण—१३२ (Change a to e) 'अ' से 'ए' देखिये—हार्नले—तुलनात्मक व्याकरण—१४८

३ (the á is shortened to a by Hemchandra ३,१५०)

१ कसक (संयुक्त धातु)—स कष+कृ प्रा कसक्केइ या कसक्कइ हि कसके।

११ कढ़ (derivative) कर्मवाच्य या अकर्मक इसका जन्म धातु 'काढ़' से हुआ है (देखिए, मूलधातु २७)।

१२ कढ़ (derivative) धातु 'काढ़' का कर्मवाच्य या अकर्मक है (देखिए—११)

११ काढ़ (नाम धातु)—स भूतकालिक कृदन्त-कृष्ट प्रा कड्ढइ (हेमचन्द्र ४ १८७) हि काढ़े।

१४ खरक (संयुक्त धातु) या खड़क—सं स्खल+कृ प्रा खलक्कइ या खडक्कइ, हि खरके या खड़के। इसी अर्थ वाली एक भिन्न धातु और है—खर् खर् खड़-खड़। ये मराठी और पंजाबी में भी हैं। इस धातु का मूल अर्थ है फिसलना या लुढ़कना—शब्द करते हुए। इसके दर्शन मराठी के खड़क या खरक (धारा का प्रवाह पथ) में होते हैं। धातु 'खड़' का प्रयोग भी मराठी में है जिसमें मौलिक अर्थ छिपा हुआ है—गिरना। पंजाब में भी है वहां इसका अर्थ है 'जाना' है।

१५ गड़ (derivative) (be hollowed be sunk) कर्मवाच्य अकर्मक है जो धातु 'गाड़' (देखिए १६) से व्युत्पन्न है।

१६ गाड़ (नाम धातु)—स संज्ञा—गर्त प्रा गड्ड (वररुचि ३ २५) प्रा गड्डेइ या गड्डइ हि गाड़े अथवा इसका अपभ्रष्ट रूप-गाढ़े (१७)

१७ गाढ़ —स भूतकालिक कृदन्त—गाढ़ प्रा गाढइ हि गाढ़े।

१८ गोद (नाम धातु) चिह्नित करना या गोदना—सं संज्ञा-गोर्द प्रा गोद्देइ या गोद्दइ, हि गोदे (?)

१९ घबराय् (नाम धातु)—सम्भवत 'गह्वरवाय' का अपभ्रष्ट रूप है, जिसका अर्थ गहरी है। यह 'गह्वर' से बना है—सं संज्ञा-अर्थ (शब्द विस्ताहट आदि)।

२ चिनाय या चिनचिनाय (नाम धातु)—स संज्ञा-चूना या (denominative) चुनि का (धातु-चुन)—प्रा चिना (हेमचन्द्र ४ १२८) या चिंचिणा प्रा चिनाअेइ या चिनाअइ या चिनचिनाअेइ या चिनचिनाअइ, हि चिनाये चिनचिनाये।

२१ चिर् (derivative)—'चीर' का कर्मवाच्य अकर्मक (देखिए मूल धातु—१४)

२२ चपक (संयुक्त धातु)—स चप या चर्प+कृ प्रा चप्पक्केइ, या चप्पक्कइ हि चपके।

२१ चमक (संयुक्त धातु) glitter—स चमत्+कृ कर्मवाच्य-चमत्क्रियते (कर्तृवाच्य के भावसहित) प्रा चमक्केइ, या चमक्कइ हि चमके।

२४ चाह (नाम धातु) 'चाह' का अपभ्रष्ट रूप (देखिए—४)

२५ चिर् (derivative) be torn—'चीर' धातु का कर्मवाच्य या अकर्मक रूप। देखिए—११

---

४ The Change of 'स' या 'र' to 'ड' या 'ड़' is anomolous. यह प्राकृत में हो गया था। हाल की सप्तशतक ४४ पक्खडइ—स प्रस्खलति सप्तशतक १६६, पड़िय स स्खलित। सम्भवत स्खड धातु से कोई सम्बन्ध हो। धातु धर और धाम् भी दर्शनीय हैं। धातु खरक और फरक भी देखिए।

२६ चिकनाव् (नाम धातु) smooth polish = सं० संज्ञा-चिक्कण या चिक्किण (सम्भवत यह भी एक संयुक्त शब्द है 'चित्' का = चित्र और कृ = प्रा० किण) प्रा० चिक्कणावेइ या चिक्कणावइ, हि० चिकनावै ।

२७ चिढ़ाव (नाम धातु) या चिडाव, गाली देना = सं० भूतकालिक कृदन्त क्षिप्त ('क्षिप्' धातु से व्युत्पन्न) प्रा० छिडावइ, हि० चिढावै (महाप्राणत्व का विपर्यय) या चिढावै (महाप्राणत्व का लोप)[५]

२८ चिताव् (नाम धातु) = सं० भूत कालिक कृदन्त-चित्त, प्रा० चित्तावेइ या चित्तावइ (सेतुबन्ध, ११,१) हि० चितावै[६] ।

२९ चीत् (नाम धातु) Paint = सं०-संज्ञा-चित्र, सं० चित्रयति, प्रा० चित्तेइ या चित्तइ, हि० चीतै ।

३० चीन् या चीन्ह (नाम धातु) पहचानना = सं० संज्ञा-चिह्न, प्रा० चिण्ह (हेमचन्द्र २,५०) सं० चिन्हयति, प्रा० चिण्हेइ या चिण्हइ हि० चीन्है या चीनै ।

३१ चीर (नाम धातु) फाडना = सं० संज्ञा-चीर (rag) इससे सं० चीरयति, प्रा० चीरेइ या चीरइ, हि० चीरै ।

३२ चूक (संयुक्त धातु) समाप्त होना = सं० च्युत + कृ, प्रा० चुक्कइ, (हेमचन्द्र ४, १७७) हि० चूकै ।[७]

३३ चूक (ग़लती) = सं० च्यु + कृ, प्रा० चुक्कइ, हि० चूकै ।[७]
जहाँ तक व्युत्पत्ति का सबध है, यह धातु पूर्व धातु (३२) के समान ही है । मौलिक अर्थ 'गिरना' 'भूल' में परिवर्तित हो सकता है । इस अर्थ में यह प्राकृत में बहुधा मिलता है (सप्त शतक, ५,३२३) चुक्कसकेआ भूल की, फिर-सप्त शतक ५,१६६, सेतुबन्ध १,६ में भी है, जहाँ टीका इसकी इस प्रकार व्याख्या करती है 'प्रमादे देशी इति केचित्' अर्थात् कुछ के मतानुसार यह शब्द 'देशी' शब्द है, जिसका अर्थ भूल करना है—देखिए—S Goldschemidt's edition of सेतुबन्ध ।

---

५ (अ) महाप्राणत्व के परिवर्तन के सम्बन्ध में देखिये—
न० ४७ छेड् या छोड्, जहाँ महाप्राणत्व है ।
(ब) मूल धातु = ६५ चढ्
(स) 'प्त' का 'न्त' और 'ड' (ढ) हो जाना—देखिये धातु जुडाव जो भूतकालिक कृदन्त 'युक्त' से बना है ।
(द) मूलधातु न० ९२, ९३ जुट् और जोड् ।

६ सेतुबन्ध ११, १ भूतकालिक कृदन्त 'चित्तविअ' प्राप्त होती है—(हेमचन्द्र ३१५०) जिसकी ठीक से व्याख्या में अर्थ 'चेतित' या 'निवृत्त' या परितोपित लिखा गया है ।

७ हेमचन्द्र ने इसके स्थान पर संस्कृत् धातु 'भ्रंश' (Fall down) जो 'च्युत' का पर्यायवाची है, दिया है । च्युत की ठीक व्युत्पत्ति सेतुबन्धु के व्याख्याकार ने न० १, ६ में दी है । स० धातु चुक्क्—दशमवर्ग—चुक्कयति ।

४६ छीड, छेड (abuse) = स० भूतकालिक कृदन्त कर्मवाच्य = क्षिप्त, प्रा० छेडेइ या छेडइ, हि० छेडै या छोडै (देखिए २७ = ४२) सम्भवत क्षिप्त से एक धातु 'छिद्' निकली जैसे स० धातु जुट्, युक्त से व्युत्पन्न हुई। 'छिट्' का प्रेरणार्थक 'छेटि' होगा, जैसे 'जुट' का प्रेणार्थक जोटि हुआ। यहाँ से प्रा० छेडेइ और प्रा० जोडेइ हि० छेडै—जोडै हुआ। छिट् धातु जो जुट् के समान है, हिन्दी में नही मिलती। केवल इसका सयुक्त रूप छिटक् मिलता है। (देखिए—४१) सम्भवत ४३ तथा ४५ भी 'क्षिप्त' से व्युत्पन्न हुए हो। इसी प्रकार के धातु समूह है—छुट, छूट, छोड। नीचे लिखी रूप-श्रेणियाँ हो सकती है —

१ स० युक्त, प्रा० जुत्त या जुट्ट, धातुएँ स० जुट, प्रा० जुट्ट या जुड, हि० जुट, जुड।

२ क्षिप्त प्रा० छुत्त या छुट्ट, धातुएँ—स० छेट, प्रा० छुट्ट, छुड्, छुट्, हि०, छुड। छोड—प्रेरणार्थक।

३ क्षिप्त, प्रा० छित्त या छिट्ट, धातुएँ स० छिट, प्रा० छिट्ट या छिड, हि० छिट, छिड। प्रेरणार्थक—छेड।

(प्राकृत की 'ट्ट' से युक्त धातुएँ सस्कृत भूतकालिक कृदन्त कर्मवाच्य से व्युत्पन्न दीखती हैं। उनका सस्कृत में पुनर्ग्रहण अन्त्य 'ट्' के साथ हुआ। पीछे इन्होंने 'ड' से युक्त प्राकृत धातुओ को जन्म दिया। यह साधारण ध्वन्यात्मक परिवर्त्तन के नियम के अनुसार हुआ जिसमें 'ट' का 'ड' हो जाता है। दो प्रा० धातुएँ—'ट्ट' से युक्त तथा 'ड' से युक्त—हिन्दी में आती है। 'छिट्ट' का प्रयोग कम मिलता है। सस्कृत धातुओ के साथ इसका वर्णन नही मिलता। यह हिन्दी में भी प्राय जीवित नहीं है। छिटक अवश्य मिलता है।

४७ छान (नामधातु = छिनाना) = स० भूतकालिक कृदन्त कर्मवाक्य छिन्न ('छिद्' धातु से) प्रा० छिन्नेइ या छिन्नइ, हि० छीनै।

४८ छुट या छूट (नामधातु = be let off, be released) = स० भूतकालिक कृदन्त कर्मवाच्य—क्षिप्त, प्रा० छुत्त (हेमचन्द्र, २,१३८) या छुट्ट (सुम्भचन्द्र, प्राकृत ग्रामर १, ३, १४२, छुट्) प्रा० छुट्टेइ या छुट्टइ, हि० छुटै या छूटै (देखिए—४६ तथा ५०) 'छट' या क्षुट्' धातु का ग्रहण सस्कृत में प्रेरणार्थक तथा सकर्मक रूप के अतिरिक्त नही हुआ। सस्कृत में 'छुट्' धातु का अस्तित्व तो है किन्तु इसने एक अलग अर्थ (काटना) ग्रहण कर लिया है। इसी प्रकार का अर्थ-परिवर्तन सस्कृत की एक अन्य धातु-श्रेणी में भी देखा जा सकता है, जिनका मूल भी क्षिप्त में है, क्षिप्त प्रा० में खित्त (हेमचन्द्र, २,१२७) हो जाता है, या खुत्त है (सप्तशतक ४,२०८) या खुट्ट, जहाँ से प्रा० नामधातुएँ खुट्ट, या खुड (हेमचन्द्र ४,११६, खुट्टइ या खुडइ वह तोडता है) निकलती है। हिन्दी में 'खूट' हो जाता है, खुड का कोई अस्तित्व नहीं। ये खुड तथा इसके प्रेरणार्थक या सकर्मक रूप खोट या खोड् सस्कृत में ग्रहण कर लिए गए। (देखिए मूलधातु ४१)

४९ छेद (नामधातु—Perforate)—सं० संज्ञा छिद्र (धातु-छिद्) यहाँ से सं० छिद्रयति प्रा० छिद्देइ या छिद्दइ हि० छेदै।

५० छोड़ (derivative-release) 'छूट्' से व्युत्पन्न एक कर्तृवाच्य तथा सकर्मक (देखिए—४८) संस्कृत धातु 'छोट' से तुलना करिये।

५१ जुगाए (नामधातु—pair of labor) सं० संज्ञा-युग्म प्रा० जुग्ग (हेमचन्द्र २,७८) प्रा० जुग्गावेइ या जुग्गावइ हि० जुगावैं।

५२ जताए (नामधातु—जताना)—सं० भूतकालिक कृदन्त कर्मवाच्य ज्ञप्त (धातु ज्ञा के प्रेरणार्थक का) प्रा० जत्तावेइ, हि० जतावै।

५३ जम (नामधातु—जमना) सं० संज्ञा-जन्म प्रा० जम्मेइ या जम्मइ (हेमचन्द्र ४ १३६) हि० जमै।

५४ जीत् (नामधातु—जीतना)—सं० भूतकालिक कृदन्त कर्मवाच्य-जीत (धातु 'ज्या' का) प्रा० जित्तेइ या जित्तइ, हि० जीतै।

५५ जुड़ (derivative—जुड़ना) धातु 'जोड़' (५७) का कर्मवाच्य या अकर्मक।

५६ जुट (नामधातु—जोड़ना)—सं० भूतकालिक कृदन्त कर्मवाच्य युक्त प्रा० जुत्त (हेमचन्द्र १४२) या जुड्ड (देखिए—४६, ४८) प्रा० जुड्डेइ या जुड्डइ, हि० जुड़ै। सं० धातु 'जुड़' से तुलना करिये।

५७ जोड़ (derivative—जोड़ना) 'जुड़' (५६) से व्युत्पन्न कर्तृवाच्य या सकर्मक।

५८ जोत् (नामधातु—जोतना) yoke—सं० संज्ञा-योक्त्र स० योक्त्रयति प्रा० जोत्तेइ या जोत्तइ हि० जोतै।

५९ जोह या जोय् या जो (नामधातु-देखना) सं० संज्ञा ज्योतिस्, प्रा० जोएइ (हेमचन्द्र ४४२२) या जोअइ (हेमचन्द्र ४ ३३२, जोअदिहि) हि० जोऐ या जोवै जोहै। (य और ह के सम्बन्ध में देखिये तुलनात्मक व्याकरण—६१)

६० झटक् (संयुक्तधातु—To twitch) सं० झट्+कृ प्रा० झट्टक्केइ या झट्टक्कइ हि० झटकै। 'झट' की व्युत्पत्ति के लिए मूलधातु 'झोट' (६६) देखिए।

६१ झपक (संयुक्तधातु—spring) कूदना इधर-उधर चलना Snatch)—सं० झप+कृ प्रा० झपक्केइ या झपक्कइ हि० झपकै। हेमचन्द्र (४ १६१) इससे मिलती जुलती एक और असंयुक्त क्रिया 'झंपइ' देता है किन्तु केवल अकर्मक रूप में (Move to and fro)। इसका सम्बन्ध संस्कृत भ्रमति से जोड़ा गया है। हिन्दी और मराठी में वही असंयुक्त क्रिया 'झाँपै' है, किन्तु सकर्मक रूप में (Cover with thatch) (इसका शाब्दिक अर्थ होता है घास के पुलवे फेंकना)। 'झप' की व्युत्पत्ति के लिए देखिए—परिशिष्ट, संख्या-६। हिन्दी में एक क्रिया-विशेषण झप् (झप्पी) मिलता है। हिन्दी में एक अन्य प्रकार की संयुक्त धातु 'झपट' भी है जिसका अर्थ प्रायः झपक के समान है।

६२ झलक (संयुक्त धातु) चमकना—सं० झला+कृ प्रा० झलक्केइ या झलक्कइ हि० झलकै। झल की व्युत्पत्ति के लिए देखिए-मूलधातु संख्या ६८।

६३ भाँक् (नामधातु = भाँकना) = स० मज्ञा-अध्यक्ष, प्रा० अज्भ-क्खइ, हि० भाकै (आरंभिक 'अ' का लोप होगया, तथा महाप्राणत्व का भी लोप हो गया)

६४ भीक् (संयुक्त धातु ग्राह भरना, खेद करना) स० क्षीद् + कृ, कर्म वाच्य-क्षीक्रियते (कर्तृवाच्य भाव सहित) प्रा० भिक्केइ या भिक्कइ, हि० भीकै ।

६५ भुक् (संयुक्तधातु) या भोक (Stagger, nod, bend) = स० क्षुभ कर्म० एकवचन० नपुंसक लिंग क्षुप + कृ प्रा० भुक्कइ, हि० भुकै या भोकै ।

६६ भोक् या भोक (संयुक्त धातु) = फेंकना = स० क्षेप (या क्षप) + कृ प्रा० भेंवक्कइ, हि० भोकै या भोकै ।

६७ टिक् (derivative, = ठहरना be propped = स० ६८ से व्युत्पन्न कर्मवाच्य या अकर्मक रूप ।

६८ टेक् (संयुक्त धातु—Prop, Support) = स० आय ('त्रै' धातु का) + कृ, प्रा० टायक्कइ, हि० टेकै ?

६९ ठट् (नाम धातु) fix, arrange = स० भूतकालिक कृदन्त, कर्म-वाच्य-स्तब्ध ('स्तम' धातु) प्रा० ठड्डेइ या ठड्डइ, हि-ठठै 'ढ' का 'ठ' में परिवर्तित होना सम्भवत आरंभिक 'ठ' के कारण है । पुरानी हिन्दी में 'ठठ्ठै' थोडा देर ठहरने के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है या आश्चर्य चकित या भौंचक्के होने के अर्थ में है । अब भूत कालिक कृदन्त उसी रूप में प्रयुक्त होता है तब मूल 'ढ' रखा जाता है । इस प्रकार पुरानी हिन्दी में ठाढ तथा आधुनिक में 'ठडा' (खडा हुआ) ।

७० ठठक् (संयुक्त धातु) ठिठक् (थोडी देर ठहरना) स० स्तब्ध + कृ, प्रा० ठठ्ठक्कइ हि० ठठकै या ठिठकै । 'ठठ' की व्युत्पत्ति के लिए ६९ देखिए । 'ख' के स्थान पर 'ड'—देखिए तुलनात्मक व्याकरण—३५ ।

७१ ठनक् (संयुक्तधातु) (एक प्रकार की ध्वनि) = स० स्तन (Sounding) + कृ, प्रा० ठनक्केइ या ठनक्कइ, हि० ठनकै । स० टकार—ट + कृ, ट या ठका तात्पर्य ध्वनि से है ।

७२ ठमक् (संयुक्तधातु-Strut) = स० स्तम्भ + कृ, प्रा० टम्भक्कइ, ठम्हक्कइ हि० ठमकै । स० स्तम्भ-प्रा० थभ या ठभ (हेमचन्द्र २,९ हिन्दी थाम् और ठाम । 'म्भ' 'का' म्ह' व 'म' में परिवर्तन देखिए मूल धातुएं ११७, ११८ ।

७३ ठसक् (संयुक्त धातु)-Knock, Chip = स० तक्ष + कृ (देखिए परिशिष्ट, संख्या १० में ठाँस्') हिन्दी में एक विस्मयादिबोधक 'ठस्' खटखटाने की ध्वनि के अनुरूप, 'ठसनी' भी है (Grammar)

७४ ठहर् (नाम धातु रहना, धातु संख्या ७५ का एक अन्य रूप है । सम्भवत इस प्रकार हो—ठढ = ठहह = ठहह = ठहरा । या 'र' तत्व उसी प्रकार हो जैसे 'र' या 'ल' ठहर और ठहल में हैं । हिन्दी में एक सज्ञा 'ठाहर' भी है = स्थान, 'र' 'ल' के सम्बन्ध में तुलनात्मक व्याकरण ३५४,२—ठह—प्रा० ठढ—सस्कृत स्तब्ध ।

७५ ठाढ् या ठाड् नामधातु (be fixed, be erect या खडा होना) स० भूतकाल

कृदंत कर्मवाच्य स्तब्ध प्रा ठद्ध (हेमचन्द्र २ ३९) प्रा॰ ठड्डइ या ठाड्ड हि ठाढ़े या ठाढ़ै।

७६ डर् (नामधातु-भय)—सं दरा—दर, प्रा डर (हेमचन्द्र ८ २१७ प्रा॰ डरइ हेमचन्द्र ४ १९८) हि डरै।

७७ डाह् (नामधातु—गरम होना)—सं॰ दाह प्रा डाह (हेमचन्द्र १ २१७) प्रा डाहइ या डाहइ हि डाहै।

७८ ढक् (संयुक्तधातु, ढकना)—संस्कृत संज्ञा-स्थग् (कर्म एकवचन नपुंसक—स्थक्) +कृ प्रा ढक्कइ (हेमचन्द्र ४ २१) हि ढकै (देखिए मूलधातु, संख्या १ १)[11]।

७९ ढल् (derivative) या ढर (बहना) 'ढाल' या 'ढार' धातु का कर्मवाच्य या अकर्मक। देखिए परिशिष्ट धातु ११।

८ थक या थाक (संयुक्त धातु-थकना) सं स्तम् (कर्म कारक-एक वचन-नपुंसक॰ स्तप्)+कृ प्रा थक्केइ (हेमचन्द्र ४ १७) या छठवाँ अर्थ—थक्कइ (हेमचन्द्र ४ ८७ २५९—यहाँ यह सं फक्कति का स्थानापन्न कहा गया है जिसका अर्थ धीरे-धीरे चलना है जो थकावट के कारण हो) हि थकै थाकै। हेमचन्द्र (४ १६) ने इस धातु को 'स्था' (खड़ा होना) के समान माना है। मराठी में 'थाक' है जिसका उच्चार 'थक' होता है—रुकना ठहरना। हिन्दी में इसका मूल अर्थ 'ठहर जाना' (Come to stop) है जो थकान के कारण हो। सं कर्मवाच्य 'स्तम्यते' (—स्तप्+क्रीयते) का अर्थ है—मजबूत बनाना या कठोर बनाना (be paralysed)। हिन्दी में मूल अर्थ कठोरता सुरक्षित है। ठहरना चाहे थकान के कारण हो अथवा आश्चर्य के कारण हिन्दी का 'थकित' दोनो अर्थ रखता है इससे व्युत्पन्न अन्य रूप हैं—थकन, थकावट, भकमका (Perplexed)[12]।

---

११ यह संस्कृत की मूल धातु स्थग् से भी व्युत्पन्न हो सकता है। पहला अर्थ तत्पति प्रा ठक्कइ—थक्कइ—ढक्कइ। परिशिष्ट की धातुएं ठोस्, ठक ठोस्, ठोक की तुलना करिये। सं धातु स्थग् और 'स्तम्'—प्राकृत में 'थ' के स्थान पर 'ठ' होजाता है। सं धातु 'स्थग'—(chipping off and covering) ऐसा ही अर्थ परिवर्तन हिन्दी धातु मढ (ढकना) में जो सं मृद् (रगड़ना) से व्युत्पन्न है हो गया है।

१२ S Goldschmidt, Prakritica (No- 7 P 5) में इसकी व्युत्पत्ति नामधातु से बताता है—भूतकालिक कृदन्त कर्मवाच्य स्तब्ध (धातु, स्तभ) जिसको वह धातु 'स्थग' के समान बताता है और उसके मतानुसार 'ग्ध' 'क्क' में परिवर्तित हो गया है। इस सिद्धान्त का आधार तीन कल्पनात्मक स्थितियां हैं स्तभ तथा स्तम की समानता स्तब्ध (भूतकालिक कृदन्त-कर्मवाच्य) का अस्तित्व तथा 'ग्ध' का 'क्क' में परिवर्तित होना पिशेल (Bezzenberger s Beitrage III २३५) इसकी व्युत्पत्ति सं धातु 'स्थग्' से मानता है।

८१. थपक् (संयुक्तधातु) = स० थप् + कृ, 'थप्' की व्युत्पत्ति के लिए देखिए, धातु 'थाप्' परिशिष्ट, धातु-संख्या-१३।

८२ थलक् या थरक् (फड़फड़ाना, Tremble) सम्भवत: 'खरक' का एक भिन्न उच्चारण है या 'फरक' का। 'फ' तथा 'थ' का विनिमय प्रा० फक्कइ तथा थक्कइ में देखा जा सकता है (हेमचन्द्र ४, ८७) 'ख' और 'थ' का विनिमय खभो और थभो में देखा जा सकता है (हेमचन्द्र – २,८) इसका द्वित्व रूप 'थल्थल्' या 'थर् थर' भी है, जो 'खरखर' या 'फर फर' के समान है।

८३ थिरक् (संयुक्तधातु-नाचने आदि में) = स० स्थिर + कृ, प्रा० थिरक्केइ या थिरक्कइ, हि० थिरकै

८४ थिराव्, (नामधातु = settle as liquor) = स० संज्ञा-स्थिर, स० स्थिरायति, प्रा० थिरावेइ या थिरावइ, हि० थिरावै।

८५ थुक् (संयुक्तधातु) = स० ष्ठेव (या स्येव) + कृ, प्रा० थुक्केइ, या थुक्कइ, हि० थूकै। 'एव' का सकुचित रूप 'उ', देखिये तुलनात्मक व्याकरण—१२२

८६ दउड या दौड (run-नामधातु) = स० संज्ञा द्रव, प्रा० दवड, प्रा० 'दवडेइ' या दवडइ, (५०) हि० दउडै, प० हि० दौडै।[13]

८७ दरक् (संयुक्तधातु) (Split) = स० दर + कृ, प्रा० दरक्केइ या दरक्कइ, हि० दरकै।

८८ दहक (संयुक्तधातु-जलना) = स० दह् + कृ, प्रा० दहक्केइ या दहक्कइ, हि० दहकै।

८९ दुख् (नामधातु-पीडा) = स० संज्ञा दु:ख, स० दु:खयति, प्रा० दुक्खेइ या दुक्खइ, हि० दुखै।

९० धडक् (संयुक्तधातु-भावावेश में जलना, दुखी होना, भय से) = स० दग्ध + कृ, प्रा दड्ढक्कइ, हि० धडकै। इसका द्वित्व रूप 'धडधड' भी है।[14]

९१ धार् (नामधातु-उडेलना) = स० संज्ञा, धार, प्रा० धारेइ या धारइ, हि० धारै।

९२ धौंक या धौक (संयुक्त धातु breathe upon) = स० धम + कृ प्रा० धमक्केइ या अप० प्रा० धवँक्कइ, हि० धौंकै।

९३ नट् (नामधातु-नाचना) = स० संज्ञा-नर्त स० नर्तयति प्रा० नट्टेइ, या, छठवाँ वर्ग, नट्टइ (हेमचन्द्र ४,२३०—२,२३०) हि० नटै। स० धातु 'नट' (प्रथम वर्ग नटति या दशम् वर्ग-नाटयति) सम्भवत प्राकृत से ली गई है।

---

१३ 'चन्ड के 'प्राकृत-लक्षण' (C D 11, 27 b) में एक धातु, 'दव दव' की ओर इगित किया गया है जिसका अर्थ है मुह नीचा किये दौड़ना। मराठी में 'दव दव' तथा 'दवड' दोनो इसी अर्थ में प्रयुक्त होते है। इसमें दवड भी है। ये दोनो धातुएँ एक ही है। प्रारम्भिक 'द' का 'ड' में बदल जाना अनहोनी बात नही है (हेमचन्द्र, १,२१७)

१४. हिन्दी में 'धड' (body) तथा प्रबल ध्वनि के लिए, भी आता है। यह स० दृढ़ से निकला होगा। प्रा० दढ = हि० धड

पट, प्रा० पट्टेइ या (छठवाँ वर्ग) पट्टइ, हि० पटै। म० में पत्र का अर्थ है सिंचाई का पात्र, पट्ट का अर्थ है बहीखाता जिसमें अदायगी का हिसाब लिखा जाता है, पट का अर्थ है—छत।

१०९ पनप् (नामधातु—बढ़ना)=सं० संज्ञा प्रपञ्च (धातु प्र+पच) सं० प्रपचयति, प्रा० पपणेइ या पपणइ (हेमचन्द्र २,४२) हि० पनपै (पनपै का रूप) तु० व्याकरण—१३३।

११० पनियाव् (नामधातु—सींचना)=सं० संज्ञा पानीय, प्रा० पाणिअ' (हेमचन्द्र १,१०१) प्रा० पणियावेइ या पणियावइ, हि० पनियावै।

१११ परिस् या परस् (नामधातु—छूना)=सं० संज्ञा-स्पर्श, प्रा० फरिस (वररुचि ३,६२) प्रा० फरिसइ (हेमचन्द्र, ४,१८२) हि० परिसै या परसै (महा प्राणत्व का लोप हो गया, 'इ' के स्थान पर अ आ गया)।

११२ पलट् (नामधातु=उलटना) या पलथ्=सं० भूतकालिक कृदन्त कर्मवाच्य-पर्यस्त, प्रा० पल्लट्ट या पल्लत्थ (वररुचि ३,२१, हेमचन्द्र २,४७)प्रा० पल्लट्टइ या पल्लत्थइ (हेमचन्द्र ४,२००) हि० पलटै या पलथै। (हेमचन्द्र ४,२००/२८५ पल्हत्थ और पल्हत्थइ २—तु० व्याकरण—१६१)

११३ पहिचान् या पहचान् (नामधातु=पहचानना)=सं० संज्ञा-परिचयन्, प्रा० परिच-अणेइ या परिचअणइ, हि० पहिचानै या पहचानै। 'र' के स्थान पर 'ह' के लिये देखिये तुलनात्मक व्याकरण ६६, १२४।

११४ पिहन् या पहिन् (derivative) मूलधातु 'पिहनाव' या 'पहिनाव (संख्या-१६७-१६६) का कर्मवाच्य या अकर्मक [17]।

११५ पिचक् (संयुक्तधातु—पिचकना)=सं० पिच्च+कृ, प्रा० पिच्चक्केइ या पिच्चक्कइ, हि० पिचकै। पिच्च या 'पिच्' की व्युत्पत्ति के लिए देखिए, मूलधातु 'पीच' (संख्या १७५) संस्कृत में यह शब्द प्रा० से गृहीत हुआ है [18]।

११६ पिछल् या फिसल (नामधातु—फिसलना)=सं० संज्ञा-पिच्छिल या पिच्छल (slippery), प्रा० पिच्छलेइ या पिच्छलइ हि० पिछलै या फिसलै (महाप्राणत्व 'प' में आगया। छ का स हो गया। देखो तुलनात्मक व्याकरण ११।

११७ पिट् (derivative—पीटना) धातु पीट (संख्या—११६) का कर्मवाच्य या अकर्मक।

११८ पिल् (derivative—पोटना आदि) धातु 'पेल्' (संख्या—१२१) से व्युत्पन्न कर्मवाच्य या अकर्मक।

११९ पीट (नामधातु)=सं० भूतकालिक कृदन्त कर्म वाच्य—पिष्ट, प्रा० पिट्टेइ (सप्तशतक

---

१७ बँगला में धातु 'पिनध' है जो सं० भूतकालिक कृदन्त कर्मवाच्य (पिनद्ध) की नामधातु है। हिन्दी धातु की भी इसी प्रकार व्याख्या हो सकती है जिसमें 'ध' का 'ह' हो गया है।

१८ सं० में 'चिपिट' शब्द 'प' और 'च' के विपर्यय से परिवर्तित हुआ दीखता है।

१३४. बिनद् (नामधातु—खराब होना) सम्भवत स० भूतकालिक कृदन्त कर्मवाच्य विलम्बित (विनष्ट) से सबधित।

१३५ बीट् (नामधातु—बिखेरना) = स० भूतकालिक कृदन्त कर्मवाच्य-व्यस्त, प्रा० विट्ट (विट्ठ) प्रा० विट्टेइ या विट्टइ हि० बीटे।

१३६ बीत् (नाम धातु—समाप्त होना) स० भूतकालिक कृदन्त कर्मवाच्य वीत, प्रा० वित्त प्रा० वित्तेइ या वित्तइ, हि० बीते। (सस्कृत विहित के स्थान पर प्रा० विहित्त (हेमचन्द्र २६६)।

१३७ बेढ़् (नामधातु—घेरना) = स० वेष्ट, प्रेरणार्थक वेष्टयति या प्रथमवर्ग-वेष्टते, प्रा० वेढ़ेइ (हेमचन्द्र ४,५१) या वेढ़इ (हेमचन्द्र ४,२२१) हि० बेढ़े।

१३८ बउरान् या बौराइ (नाम धातु—पागल होना) = स० सज्ञा वातुल, प्रा० वाउलावेइ या वाउलावइ, हि० बउरावे या बौरावे। देखिये तुलनात्मक व्याकरण २५।

१३६ भाग् (नामधातु—भागना) = स० भूतकालिक कृदन्त कर्मवाच्य-भग्न प्रा० भग्ग (हेमचन्द्र ४,३५४) प्रा० भग्गेइ या भग्गइ हि० भागे।

१४० भींग या भीग (नामधातु—भीगना) = स० अभ्यग, प्रा० अभिगेइ, अभिगइ, हि० भींगे या भीगे (?) मूलधातु भीज (परिशिष्ट सख्या २१) से मिलाइए।

१४१ भुन (derivative—भुनना) धातु 'भून' (सख्या—१४३) से व्युत्पन्न कर्मवाच्य या अकर्मक।

१४२ भूल् (नामधातु) भोल या भोर (भूलना, गलती करना) स० भूत कालिक कृदन्त कर्मवाच्य—भ्रष्ट, प्रा० भुल्लइ (हेमचन्द्र ४, १७७) पू० हिन्दी—भूलै या भोलै, पू० हि० भूरै या भोरै, स० भ्रष्ट = प्रा० भट्ठ = भल्ह[21] = भुल्ल।

१४३ भून् (नामधातु) = स० भूतकालिक कृदन्त कर्मवाच्य भूर्ण (Pan ८ २ ४४) प्रा० भुणेइ या भुणइ, हि० भुनै।

१४४ मढ् (नामधातु—मढना, ढकना) = स० भूतकालिक कृदन्त कर्मवाच्य मृष्ट, प्रा० मड्ढ या मड्ड, प्रा० मड्ढइ या मढ़इ (हेमचन्द्र ४, १२६) हि० मढै। स० धातु 'मठ' (ढकना) आदि प्राकृत या पालि मट्ठ (= मृष्ठ) से गृहीत है, जहाँ से 'मठ' आया, किन्तु हि० में मढ़ या मढा है। इसी प्रकार कढ्, बेढ् धातु से भी।

१४५ मत् (नाम धातु—परामर्श करना) = स० सज्ञा-मत्र, प्रा० मतेइया मतइ (हेमचन्द्र ४, २६० मतियो) हि० मतै।

१४६ मिट् (derivative—be effaced) धातु 'मेट' (१५३) का कर्मवाच्य या अकर्मक।

१४७ मुड् (derivative)—मूँडना—मूलधातु मूँड (२८४) से व्युत्पन्न कर्मवाच्य या अकर्मक।

१४८ मुद (derivative) बन्द होना—धातु 'मूँद' (१५१) से व्युत्पन्न कर्मवाच्य या अकर्मक।

---

२१ भोल या भोर से पूर्व में इसको सस्कृत नाम धातु भ्रमर से हिन्दी में 'भौरा' या 'भोला' मानता था।

१४९ मृ (नामधातु—मरना)—सं. भूतकालिक कृदन्त कर्मवाच्य—मृत प्रा. मुअ (हेमचन्द्र ४४२) प्रा. मुअइ, हि. मुऐ।

१५० मूत् (नामधातु—पेशाब करना)—सं. संज्ञा-मूत्र सं. मूत्रयति प्रा. मुत्तेइ या मुत्तइ, हि. मूतै।

१५१ मूँद (नामधातु—बन्द करना)—सं. संज्ञा-मुद्रा सं. मुद्रयति प्रा. मुद्देइ या मुद्दइ हि. मूँदै। (हेमचन्द्र ४ ४ १ पिधीमुद्द—(sealed)

१५२ मून (नाम धातु—चुप रहना)—सं. भूतकालिक कृदन्त कर्मवाच्य मून ('मू' धातु से) प्रा. मूणेइ या मूणइ हि. मूनै (अथवा 'मौन' संज्ञा से)

१५३ मेट् (नामधातु—मिटाना)—सं. भूतकालिक कृदन्त कर्म वाच्य मृष्ट, प्रा. मिट्टेइ या मिट्टइ (मिट्टइ) हि. मेटै। पाली मट्ठ मट्ठ—मृष्ट।

१५४ मौल् या मौर (नामधातु—खिलना)—सं. संज्ञा—मौल इससे मौलयति प्रा. मोलेइ या मोलइ, प. हि. मौलै पू. हि. मौरै।

१५५ मौलाव या मौराव (नामधातु—blossom)—सं. मौल प्रा. मोल्लावेइ या मोल्लावइ, प. हि. मौलावै पू. हि. मौरावै।

१५६ रग् (नामधातु—be attached) सं. भूतकालिक कृदन्त कर्मवाच्य रक्त प्रा. रग्ग (हेमचन्द्र २, १०) प्रा. रग्गेइ, हि. रगै।

१५७ रच् (नाम धातु—रचना)—सं. संज्ञा-रच सं. रचयति प्रा. रचेइ या रचइ हि. रचै।

१५८. रुक (नाम धातु—रुकना) धातु 'रोक' (१६२) से व्युत्पन्न कर्मवाच्य या अकर्मक।

१५९ रुच् या रुच् रुच् (२६०) से व्युत्पन्न कर्मवाच्य या अकर्मक।

१६० रूठ् या रूस (रुष्ट होना) सं. भूतकालिक कृदन्त कर्म वाच्य रुष्ट प्रा. रुट्ठ (हेमचन्द्र ४ ४१४) या रूस प्रा. रुट्ठइ या रूसइ, हि. रूठै या रूसै।

१६१ रेंक (संयुक्त धातु—रेंकना)—सं. रेप् (कर्म एक वचन नपुंसक रेपः)+कृ प्रा. रेक्केइ या रेक्कइ, हि. रेंकै।

१६२ रोक (संयुक्त धातु—बाधा डालना)—सं. रुध् कर्म एक वचन नपुंसक-रुत्+कृ प्रा. रुक्केइ या रुक्कइ हि. रोकै।

१६३ रोप् (derivative—जमाना) मूलधातु रुप् (२६५) से व्युत्पन्न सकर्मक या कर्तृ वाच्य।

१६४ लचक (नाम धातु)—सं. संज्ञा—लच प्रा. (diminutive) लचक प्रा. लचकेइ या लचकइ, हि. लचकै।

१६५ लव् या लौ (नाम धातु—reap)—सं. संज्ञा—लव सं. लवयति प्रा. लवेइ या लवइ हि. लवै या लौऐ।

१६६ लुक (छिपना—संयुक्त धातु)—सं. लुप्+कृ प्रा. लुक्कइ (हेमचन्द्र ४ ५५) हि. लुकै। 'लुप्' का अर्थ है 'बाहर हो जाना या लोप हो जाना'। इसकी व्युत्पत्ति सं. धातु लुप् (तोड़ना) से हुई है। यह मूल अर्थ प्राकृत के 'लुक्कइ' में अब भी सुरक्षित है जिसका अर्थ तोड़ना काटना (हेमचन्द्र ४ ११६, जहाँ यह

सं० तुड् के समान बताया गया है) तथा अतर्धान होना अथवा अपने को छुपाना है (हेमचन्द्र ४, ५६) जहाँ यह सं० 'निली' के समान बताया गया है ?[२२]

१६७ लुभाव् या लुहाव् (लुभाना) सं० संज्ञा-लोभ, प्रा० लोभावइ या लोहावइ, हिं० लुभावै या लुहावै ।

१६८ सज् (derivative—सजना-सजाना) 'धातु' 'साज' (परिशिष्ट संख्या-२४) का कर्मवाच्य या अकर्मक ।

१६९ सटक् (संयुक्त) या सडक (get away) = सं० सत्र या सद्+कृ प्रा० सट्टक्कइ या सडक्कइ, हिं० सटकै या सडकै । 'सत्र' का अर्थ है ढकना, छिपावट् । धातु 'सद्' प्रा० 'सड' हो जाता है (वररुचि ८,५१, हेमचन्द्र, ४,२१९)

१७० सध् (derivative—सधना) मूल धातु 'साध्' (३३६) से व्युत्पन्न कर्मवाच्य या अकर्मक ।

१७१. समुहाव (नामधातु) = सं० संज्ञा-समुख, प्रा० समुहाविइ या समुहावइ, हिं० समुहाव ।

१७२ सरक् (संयुक्त धातु = खिसकना) सं० सर्+कृ, प्रा० सरक्केइ, या सरक्कइ, हिं० सरकै । सम्भवत यह 'सडक' धातु का ही एक रूपान्तर हो ।

१७३. सराप् (नामधातु—शाप देना) = सं० शाप का अपभ्रष्ट रूप ।

१७४ साठ, या साँठ् या साँट् (derivative—जोडना, मिलाना) मूलधातु राठ (३२३) से व्युत्पन्न सकर्मक या कर्तृवाच्य ।

१७५ सील् (नामधातु—सीलना) = सं० संज्ञा-शीतल, प्रा० सीअलेइ, या सीअलइ, हिं० सीलै ।

१७६ सुधर् (derivative—सुधरना) धातु 'सुधार' (३४६) से व्युत्पन्न कर्मवाच्य या अकर्मक ।

१७७ सुहाव् (नामधातु) = सं० संज्ञा सुख, प्रा० सुहावेइ या सुहावइ, हिं० सुहावै ।

१७८ सुहाव (नामधातु—सुन्दर होना) = सं० संज्ञा सोभ, सं० शोभयति, प्रा० सोहावेइ या सोहावइ, हिं० सुहावै । यह मूलधातु भी हो सकती है जिसकी व्युत्पत्ति 'शुभ' धातु के प्रेरणार्थक से हुई है ।

१७९ सूख या सुख् (नामधातु—सूखना) = सं० संज्ञा-शुष्क, प्रा० सुक्खेइ या सुक्खइ, हिं० सूखै ।

१८० सूत् (नामधातु—सोना) = सं० भूतकालिक कृदन्त कर्मवाच्य-सुप्त, प्रा० सुत्तेइ या सुत्तइ, हिं० सूतै ।

१८१ सैंत् या सेंत् (नामधातु—adjust) = सं० भूतकालिक कृदन्त कर्मवाच्य समाहित, प्रा० समाहित्त (हेमचन्द्र २,९९-निहित्त = सं० निहित) अप० समाँहित्त या समाँइत्त, हिं० (सकुचित) सैंत, जहाँ से प्रा० समाहित्तइ, हिं० सैंतै या सेंतै ।

१८२ हग् (संयुक्तधातु) = सं० हदु+कृ, प्रा० हग्गइ, हिं० हगै ।

---

२२ 'लुक्' धातु 'लुच्+कृ' से भी संबंधित हो सकती है । 'लुच्' 'लु च' धातु से है जिसका अर्थ (लुक् के समान) काटना या अतर्धान होना है । अथवा इसकी व्युत्पत्ति लु ब+कृ से हो सकती है । धातु 'लु ब' का अर्थ है अदृश्य होना ।

छाटे। इसकी व्युत्पत्ति स० नाम धातु 'छर्द' से भी दिखाई जा सकती है, दशम वर्ग छर्दयति (ऐसा हेमचन्द्र २,३६ में दीखता है) (छाँदि से छड्डइ)।

४ छप् (दबाना, छापना) = स० क्षप, प्रथम वर्ग-क्षम्पति, प्रा० छपइ, हि० छपै। अथवा यह सम्भवत क्षम् मे है, चतुर्थ वर्ग क्षाम्यति।[२४]

५. झख् या झख् या भक् (आह भरना, Chatter) स० ध्वांक्ष्, प्रथम वर्ग ध्वांक्षति, प्रा० भखइ (हेमचन्द्र ४,१४०) हि० झखै, झखै, या भकै। ध्व का भ में परिवर्तन यहाँ स० ध्वज प्रा० भज्यो हेमचन्द्र २,२७।[२५]

६ भाप् (फेंकना या ढकना) = स० क्षप्, कर्मवाच्य क्षप्यते (कर्तृ वाच्य के भाव में प्रयुक्त) प्रा० भपइ, हि० झाँपै,[२६] अथवा इसकी व्युत्पत्ति स० अधि + अट से हो सकती है, प्रेरणार्थक अध्यर्पयति, प्रा० भपेइ या झपइ, हि० भापै।

७ ठक् (खट खटाना) = स० तक्ष्, प्रथम वर्ग तक्षति, प्रा० टक्खइ (त् के स्थान पर ट) हि० ठकै। देखिए-६। स० टक्कर से मिलाओ हेमचन्द्र १,२०५

८ ठास् (raw, hammer) स० तक्ष्, प्रथम वर्ग, तक्षति, प्रा० टच्छइ, हि० ठाँसै (देखिए-१०,७,६ भी)[२७]

६ ठोक् या ठौंक = स० त्वक्ष, प्रथम वर्ग-त्वक्षति, प्रा० टुक्खइ, हि० ठोकै[२८]

१० ठोम् या ठोस (hammer) = स० त्वक्ष, प्रथम वर्ग-त्वक्षति, प्रा० टुच्छइ (हेमचन्द्र १,२०५) हि० ठोसै या ठासै (देखिए ८)

११ ढाल् या दार् (उडेलना) 'धाड' का रूपान्तर (देखिए—१४)

१२. थप् (fix, settle) = स० स्तम्, कर्म वाच्य-स्तम्यते (कर्तृ वाच्य के भाव में) प्रा० थप्पइ, हि० थपै। भ्य = व्य = व्व = प्प

---

२४ धातु 'स्पृश्' से भी प्रा० कर्मवाच्य (कर्तृ वाच्य-भाव सहित) निकल सकता है, छप्पइ (छिप्पइ से मिलता हुआ) (हेमचन्द्र ४,२५७)

२५ हेमचन्द्र ने इस क्रिया का कई वार उल्लेख किया है।

४,१४० = सतप् (Repent)
४,१४८ = विलप् (hament)
४,१५६ = उपालभ् (scold)
४,२०१ = नि श्वस (sigh)
४,२५६ = भाप् (Talk)

२६ 'द' के स्थान पर' झ स० क्षीयते प्रा० भिज्जइ (हेमचन्द्र २, ३ और अनुस्वार का अश जपइ (हेमचन्द्र ४, २/१,२६ जप्पइ के स्थान पर)

२७ (अ) 'त' के स्थान पर 'ट' देखो हेमचन्द्र १,२०५
(व) टाँछै से ठासै—'छ से 'ट' व 'छ' से 'स' देखो तुलनात्मक व्याकरण ११, १३२

२८ 'त' के स्थान पर 'ट' हेमचन्द्र १,२०५

१३ चाप या ठप् (धप्पड़ टकराना)—सं० स्पृश्, कर्मवाच्य स्पृश्यते (कर्तृवाच्य भाव सहित) प्रा० चप्पइ या ठप्पइ हि० चापै या ठपै। स्प—प्प—च्प—च्प —प्प

१४ चाड़ (उखेलना)—सं० आड प्रथम वर्ग आडति प्रा० चाडड (हेमचन्द्र ४ ७१) हि० चाडै (देखिए ११) सं० आड् प्राकृत से गृहीत है और सम्भवतः मुण्डा के मूर्धन्यीकृत कर्मवाच्य प्रत्यय का नाम धातु रूप है, प्रा० चड्ड—चड्ड —चाड

१५ फलाँग् (leap)—सं० प्र + लंघ्, प्रथम वर्ग-प्रलंघति प्रा० पलंघइ, हि० फलाँगै।

१६ फेंक या फींक—सं० प्र—इष् भविष्य-प्रेष्यति (वर्तमान के भाव में प्रयुक्त) प्रा० पेक्खइ या पेंखइ, हि० फेंकै या फींकै।

१७ बिन् (बुनना) सं० वृ नवमवर्ग-वृणाति प्रा० विणइ हि० बिनै। देखो नं० १९। बुनने के लिए सं० धातु 'वे' है प्रथम वर्ग-वयति या चतुर्थ वर्ग-ऊयते। किन्तु इस धातु से हिन्दी धातु 'बिन' की व्युत्पत्ति होना असम्भव दीखता है। बिन् धातु वृ तथा वे संबंधित दीखता है। बानी का अर्थ है बनना।

१८ बिख (फैलाना)—सं० वि-स्तृ कर्म वाच्य विस्तिर्यते (विस्तीर्यते के लिए) प्रा० विच्छोइ या विच्छय हि० बिखै।

१९ बुन् (बुनना) सं० वृ पंचम वर्ग-वृणोति प्रा० वुणइ, हि० बुनै।

२ बोझ—(load)—सं० वह् कर्मवाच्य-उह्यते (कर्तृवाच्य के भाव में) या प्रेरणार्थक कर्मवाच्य-वाह्यते। प्रा० वुज्झइ (हेमचन्द्र ४ २४५-वुज्झइ) हि० बोझै।

२१ भाज् (भीग)—सं० अभि + अञ्ज् कर्मवाच्य-अभ्यज्यते प्रा० अब्भिज्जइ, हि० भीजै या भीजै (देखिए संयुक्त धातु १४)

२२ भूक या भोंक या भौंक (बेकार बातें करना) सं० भष् भविष्य—भक्ष्यति प्रा० भुक्कइ (हेमचन्द्र ४ १८६) हि० भूकै।[२९]

२३ भेज (भेजना)—सं० अभि + व्रज् कर्मवाच्य व्रज्यते (कर्तृवाच्य के भाव में) प्रा० अभिव्वज्जइ, हि० भेजै।[१]

२४ साज् (सजाना)—सं० सज् कर्मवाच्य सज्यते (कर्तृवाच्य भाव में) प्रा० सज्जइ हि० साजै। संस्कृत धातु-शब्द सम्भवतः प्रा० से गृहीत है।

---

२९ हिन्दी में भौंकै भी मिलता है।

१ प्रारम्भिक 'अ' का लोप व ई का 'ए' में परिवर्तन—देखिए तुलनात्मक व्याकरण १७२ १४८।

पर्याय सूची

१. Causal—प्रेरणार्थक
२. Conjugation—समुच्चय बोधक
३. Contraction,—संकोच
४. Elision—लोप
५. Participles—कृदन्त
    Past P. —भूत कालिक कृदन्त
    Present P —वर्तमान कालिक कृदन्त
६. Phonetic permutation—ध्वनि व्यतिहार
७. Roots—धातुएं
    Compound R मिश्रित धातुएं
    denominative R नाम धातु
    derivative R व्युत्पन्न धातु
    Primary R अयौगिक धातु
    Secondary R यौगिक धातु
८. Substantive—सत्व वाची
९. Suffix—प्रत्यय
    Class S वर्गीय प्रत्यय
    Passive S कर्म वाच्य प्रत्यय
    Phonetic S ध्वन्यात्मक प्रत्यय
१०. Voice—वाच्य
    Change of—वाच्य परिवर्तन

परिशिष्ट २

धातु ३६—प्राकृत में कर्मवाच्य 'खाद्यते' भी प्रयुक्त होता है। जो कर्तृवाच्य सा प्रतीत होता है जैसे खज्जति "वे खाते" Delius Radices Pracritice पृष्ठ ५४, मृच्छकटिक से उद्धृत, डा० राजेन्द्रलाल मित्रा पृष्ठ ८७ में 'खज्जदि' अपनी प्राकृत शब्दावली में देते हैं।

धातु ४०—धातुएं खुल्, खोल्, खूट सब एक दूसरे से सम्बन्धित हैं और संस्कृत धातुएं क्षोट्, खोट्, खोड्, खोर्, खोल्, खुण्ड्, खुड्, खुर्, क्षुर जिन सब का अर्थ (१) Limp (लंग्) (२) Divide or break (विभाजित करना या तोड़ना)। मूल रूप 'क्षोट्' या 'क्षर्' या 'क्षुट्' प्रतीत होता है।

धातु ६५—उत्+शद् (ऊपर की ओर गिरना) संस्कृत में असाधारण शब्द है लेकिन इसका समास रूप 'उत्+पत्' के समान बन गया है। 'शद्' का अन्तिम 'द्' प्राकृत में 'ड्' हो जाता है—हेमचन्द्र ४,१३० झडइ और वररुचि ८,५१, हेमचन्द्र ४,२१६ सडइ। प्रारम्भिक 'ड' का लोप हो गया और 'छ' का महाप्राणत्व 'ह्' पर परिवर्तित हो गया है या लुप्त हो गया है जैसे धातु 'चाह' (इच्छा)—उच्छाह = उत्+

अवयज्झइ में जो अवयच्छइ का समान रूप प्रतीत होता है मृदु हो गया है। इस प्रकार हम इसके सकुचित रूप पयच्छइ = म० प्रदक्ष्यति (प्र—दृश्) को देखें। संस्कृत (classical) में दृश् का भविष्यत रूप में अर (पाणिनि VI, १,५८) के स्थान पर 'र' चलता है लेकिन बोलचाल मे दोनो ही रूप द्रक्ष्यति और द्रक्ष्यति काम में आते है। इन दोनो रूपो में से बाद के रूप से ही प्राकृत के रूप व्युत्पन्न हुए हैं जैसे अवअक्खइ = अवदक्खइ (अवदक्खइ) = अवदर्क्ष्यति। णिअच्छइ का दूसरा रूप णिअक्खइ होगा यह णिअक्कइ का रूप प्रतीत होता है—वररुचि, ८,६९ (क्ख के स्थान पर क्क) प्राकृत पासइ संस्कृत पश्यति से व्युत्पन्न हुआ है या पासइ (हेमचन्द्र १,४३) प्राकृत अवआसइ स० अवपश्यति। मराठी में प्राकृत धातु पास्—'पाह्' हो जाती है। प्रा० पुलोएइ स० प्रविलोकयति से है। अवि का सकुचित रूप उ हो गया (देखो तुलनात्मक व्याकरण १२२) प्रा० पुलएइ सम्भवत उसी का भ्रष्ट रूप है। हिन्दी में इनका कोई रूप प्रचलित नही है।

धातु १५८—पलाइ का अशुद्ध रूप सम्भवत पलाउ है।

धातु २३८—धातु झँ—प्राकृत झाअइ और इसका सकुचित रूप है 'झाइ' ठाअइ की समरूपता के आधार पर ठाइ—स्था से, ध्यै से झाअइ या झाइ है (वररुचि ८,२६) पालि में झायति और प्राकृत विज्झाइ (देखो हेमचन्द्र २,२८ = स० वि—क्षायति)। पर समास में प्राकृत रूप झेइ या झइ हो सकता है जैसे उट्ठेइ या उट्ठइ मे ठेइ या ठइ है—उत् + स्था (हेमचन्द्र ४,१७) इस प्रकार वोज्झेइ या वुज्झेइ, वुज्झइ है।

धातु २५०—'इसका सम्बन्ध संस्कृत धातु वद् से है' ऐसा प्राकृत वैयाकरणो ने लिखा है (Coldwell पृष्ठ ६६ जहाँ बोच्चइ या वोचइ धातु 'वच्' से मानी है)। बाद का रूप कर्मवाच्य वुच्यते (उच्यते) से कर्तृवाच्य के भाव में व्युत्पन्न है जैसा हेमचन्द्र ४,१६१ से प्रतीत होता है। इसी प्रकार कर्मवाच्य वूर्यते से ('वू' धातु) वोल्लइ बनाया गया है। सन्ध्यक्षर र्य—ल्ल बन गया जैसे पल्लाण पर्याण सोअमल्ल = सौकुमार्य (वररुचि ३,२१)

धातु २६०—इसका निर्देश स० धातु रह् की ओर भी किया जा सकता है। इसका अर्थ रेगिस्तान है। रख् की व्युत्पत्ति मराठी राह् = राख् से प्रतीत होती है। ख् का ह् में परिवर्तन—देखो तुल० का० ११६।

धातु ३०१—स० धातु—रुद्, रुड्, रोड्, रौड् लुट्, लुड्, लुल, लोड्।

धातु ३३७—इस धातु का अर्थ घिसना भी है। मारइ का उल्लेख हेमचन्द्र ने ४,८४ में किया है जो प्रहरति का पर्यायवाची है।

धातु ३५०—'घा' का घेइ या घइ प्राकृत में जैसे ठेइ या ठइ (स्था) सम का सकुचित रूप सूँ हिन्दी में है जैसे सें, पै प्राकृत समप्पइ—देखो ३५७। सवग्घइ इसका मध्य रूप (हेमचन्द्र ४,३६७)। धातु 'शिघ्' धातु से व्युत्पन्न हुई है प्रथम वर्ग सिंघति प्रा० सिंघइ—हिन्दी में सींघै होना चाहिए। (ई का ऊ में परिवर्तन हो गया)।

२१२	√प्रश —	भूमिका
	फ	
२१३	√फण्	१/१८७
२१४	नाम फद्	२/१२१
२१५	नाम फूत्कार	२/१२
२१६	√फेम्	१/१९६
	ब	
२१७	√बण्	१/२ १
२१८	√बंध्	१/२१५
२१९	√बाध्	१/२ १
२४	√बुक	१/२४२
	मम	/१२९
२४१	√बू	१/२५
	भ	
२४२	√भक्ष्	१/२११
२४३	नाम भल	२/११९
२४४	√भज्	१/२२२
२४५	√भञ्	१/२३३
२४६	√भण्	१/२२५
२४७	√भल्	१/२२९
२४८	√भष्	१/२२
२४९	√भाक	१/२६
२५	√भिद्	१/२५१
२५१	√भुज्	१/२६१
२५२	√भ—भ	१/१६८
२५३	क भूर्ज	२/१४३
२५४	√भृ	१/२५६
२५५	√भ्रंश	१/२५८
२५६	√भ्रम्	१/२५७
२५७	√भ्रष्	१/११२
२५८	क भ्रष्ट	२/१४२
	म	
२५९	√मण्	१/२१७
२६	√मथ्	१/२१७
२६१	√मद्	१/२७१
२६२	√मन्	१/२७०
२६३	नाम मग्न	पृष्ठ नहीं

२६४	√मा	१/२७८
२६५	√मार्ज	१/२७४
२६६	√मार्ग्	१/२७५
२६७	√मिल्	१/२८
२६८	√मिश्	१/२८२
२६९	√मुच/म	१/१९७
२७	√मुष्	१/२८४
२७१	नाम मुक्ता	२/१११
२७२	√मुह्	१/२८६
२७३	√मू	२/१५२
२७४	नाम मूल	२/१५
२७५	क मूल	२/१५२
२७६	√मृष्	१/२८५
२७७	√मृ	१/२७१ २७९
२७८	√मृज्	१/२६८
२७९	क मृत	२/१५१
२८	√मृद्	१/२७६
२८१	√मृष्	१/२८१
२८२	क मृष्ट	२/१५१
२८३	नाम मीन	२/१५४
२८४	नाम मौन	२/१५४
	य	
२८५	√या	१/८७
२८६	क युक्त	२/२७
२८७	नाम युग्म	२/५१
२८८	√युध्	१/९१
२८९	नाम यौवन	२/५८
	र	
२९	क रक्त	२/१५६
२९१	√रच्	१/१८७
२९२	नाम रंध	२/१५७
२९३	√रण	१ २४८
२९४	√रम	१/२११
२९५	√रम्	१/२९१
२९६	√रम्	१/२८१
२९७	√रम्	१/२४२

				ह	
४३७	√स्फट्	१/१८६	४५१.	नाम हक	२/१८३
४३८	नाम स्फट	२/१२३	४५२	नाम हक्कार	२/१८४
४३९	नाम स्फर	२/१२४	४५३	कृ० हत	२/१८५
४४०	√स्फल्	१/१९१	४५४	नाम हद्	२/१८२
४४१	√स्फिट्	१/१९६	४५५	√हन्	१/३५८
४४२	√स्फिट्ट	१/१९२	४५६	√हस	१/३६३
४४३	√स्फुट्	१/१९८	४५७.	√हा	१/२३३
४४४	नाम स्फूत्कार	२/१२०	४५८	नाम हार	२/१८८
४४५	√स्मि—नि+कृ+स्मि	२/१००	४५९	√हृ	१/३६७
४४६	√स्मृ	१/३४८	४६०	√हूड्	१/३६८
		३५३	४६१	√हृ	१/३५९
४४७	√स्यन्द्	२/३८		वि	१/३३२
४४८	नाम स्यन्न	२/३८	४६२	√हृष्	१/३६०
४४९	√स्रम्	१/३३९	४६३.	√ह्वल्	१/३६१
४५०	√स्विद्	१/३४३	४६४	नाम ह्वल	२/१८६
	√प्र०	१/१६३	४६५	√ह्व	१/३६६
			४६६	√ह्वे	१/३६२